ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

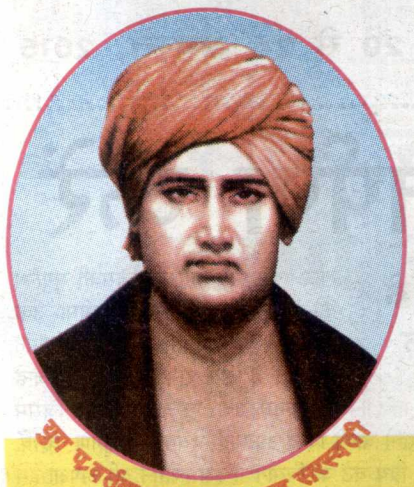

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 10 अंक 23 20 से 26 अगस्त, 2015 दयानन्दाब्द 192 सृष्टि सम्वत् 1960853116 सम्वत् 2072 श्रा. शु. 05

श्रावणी पर्व (वेद प्रचार सप्ताह) हर्षोल्लास के साथ समारोह पूर्वक मनायें

भारी संख्या में युवाओं को अपने कार्यक्रमों में लाने का प्रयास करें

– स्वामी आर्यवेश

जीवन निर्माण में स्वाध्याय का महत्वपूर्ण स्थान है। वैदिक साहित्य स्वाध्याय की महिमा का बखान करते नहीं थकते। चारो आश्रमों में स्वाध्याय करने का विधान है। वेद का प्रचार तथा वैदिक मूल्यों का स्थापन आर्य समाज की गतिविधियों में प्राथमिक महत्व रखते हैं। इस वर्ष 29 अगस्त, 2015 को रक्षा बन्धन तथा श्री कृष्ण जन्माष्टमी 5 सितम्बर, 2015 को है। दोनों पर्वों के बीच का सप्ताह वेद प्रचार सप्ताह के रूप में मनाया जाता है।

श्रावणी पर्व के अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने आर्यों का आह्वान करते हुए कहा कि वेद प्रचार सप्ताह को केवल पारम्परिक रूप में औपचारिकता पूर्ति हेतु मनाने से कोई विशेष लाभ होने वाला नहीं है। हमारा कर्त्तव्य है कि हम सच्चाई व ईमानदारी से वेद प्रचार के कार्यों को सर्वोपरि मानकर उसके प्रचार-प्रसार में समय लगायें। यदि वेद प्रचार सप्ताह को उत्साह पूर्वक अधिकाधिक लोगों को सम्मिलित करके मनायें तथा कुछ विशेष अनुकरणीय कार्य करें तो हम लोगों को प्रभावित भी कर सकते हैं तथा ज्ञान गंगा घर-घर पहुंचा सकते हैं।

श्रावणी पर्व अर्थात् रक्षा बन्धन से लेकर श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तक सार्वजनिक स्थलों, पार्कों अथवा बाजारों में अलग-अलग स्थानों पर बृहद यज्ञों का आयोजन करें। आर्य समाज के सदस्यों के अतिरिक्त क्षेत्र के प्रबुद्ध व्यक्तियों को विशेष रूप से आमन्त्रित करें तथा उन्हें यजमान भी बनायें। सामान्य जनों में अपने उद्देश्यों व सिद्धान्तों का अधिकाधिक प्रचार करें तथा उन्हें अपने विशेष आयोजनों तथा साप्ताहिक सत्संगों में आमंत्रित करें। यज्ञोपरान्त जलपान तथा ऋषि लंगर अधिकाधिक लोगों में वितरित करें।

यज्ञ के अवसर पर आर्य विद्वानों तथा स्वाध्यायशील आर्य महानुभावों के उपदेश अवश्य आयोजित किये जायें जिससे जन सामान्य को वैदिक आध्यात्मिक तथा आर्य विचारों से सन्मार्ग के लिए प्रेरित किया जा सके।

अपने-अपने क्षेत्र के अलग-अलग वर्गों जैसे युवाओं, महिलाओं, वृद्धों, बच्चों आदि के लिए अलग-अलग विचार विमर्श या मार्ग दर्शन कार्यक्रम, गोष्ठियां या लघु सम्मेलन आयोजित करें।

वेद कथा का आयोजन रात्रि में आर्य समाज मंदिरों अथवा सार्वजनिक स्थानों पर अवश्य किया जाये जिससे वेद की शिक्षाओं का लाभ धार्मिक, सामाजिक, पारिवारिक, राष्ट्रीय तथा राजनैतिक उत्थान के लिए मिल सके।

क्षेत्रीय जनता जैसे उच्च पुलिस अधिकारी, सैन्य बलों के अधिकारी विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ जैसे डाक्टर वकील, इंजीनियर तथा विशेष रूप से युवा वर्ग को आर्य समाज तथा स्वामी दयानन्द के विचारों से परिचित कराने हेतु अल्प मूल्य का लघु साहित्य भेंट स्वरूप प्रदान करें। अनजान और अनभिज्ञ लोगों को वेद के ज्ञान के दायरे में लाना हमारा परम कर्तव्य होना चाहिए।

आर्य समाज के समस्त सदस्यों की एक विशेष बैठक आयोजित करके आत्मावलोकन अवश्य करें कि क्या हमारे आर्य समाज की गतिविधियां सन्तोष जनक हैं? क्या इससे और अधिक कुछ किया जा सकता है? इस पर विचार करें तथा कार्यरूप में परिणत करें।

वेद प्रचार सप्ताह के अन्तर्गत श्रावणी पर्व से लेकर श्री

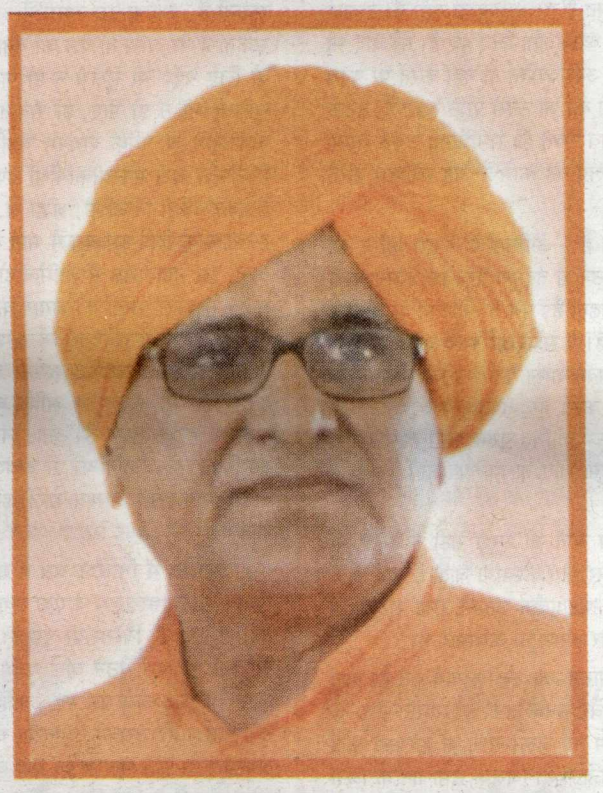

कृष्ण जन्माष्टमी तक प्रतिदिन प्रातः प्रभात फेरी (जन-जागरण) निकालने के विशेष प्रयास किये जाने चाहिएं जिसमें बच्चे, युवा, वृद्ध, नर-नारी सभी वर्ग के लोग उपस्थित हों तथा भजनों, नारों और जगह-जगह पर संक्षिप्त रूप से आर्य समाज के मन्तव्यों तथा सिद्धान्तों का प्रचार किया जाये तो अति उत्तम होगा।

श्रावणी वाले दिन विशेष यज्ञ के अवसर पर यज्ञोपवीत धारण करना तथा परिवर्तित करना विशेष रूप से सम्पादित किया जाये तथा यज्ञोपवीत क्यों धारण करना चाहिए तथा उसकी महत्ता के विषय में आम जनता को परिचित कराना न भूलें।

इसी दिन हैदराबाद सत्याग्रह के धर्म युद्ध में अपने प्राणों की आहुति देने वाले उन शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित की जानी चाहिए जिन्होंने धर्म की बलिवेदी पर अपने प्राण न्योछावर कर दिये। रक्षा बन्धन पर्व के वैदिक स्वरूप का प्रचार तथा गुरुकुल जैसी संस्थाओं को सहायता देना तथा संस्थाओं की रक्षा का ब्रत विशेष रूप से लिया जाना चाहिए।

स्वामी जी ने कहा कि हमारा प्रयास होना चाहिए कि इस वेद प्रचार सप्ताह के आयोजन में युवाओं की अधिक से अधिक भागीदारी सुनिश्चित करें। क्योंकि सुप्त पड़ी युवा पीढ़ी को नव-जीवन देने तथा राष्ट्र की मुख्यधारा से जोड़ने तथा अश्लीलता, नशाखोरी एवं शारीरिक, मानसिक, आत्मिक आरोग्यता को दूर करने के लिए युवाओं का संस्कारित होना अत्यन्त आवश्यक है। उनमें चरित्र निर्माण के प्रति जागरूकता पैदा करना, अध्यात्म, योग साधना और सद्मन्तव्यों के प्रति रुचि जाग्रत करना तथा जीवन में आत्मानुशासन के प्रति प्रतिबद्धता लाना तथा सात्विकता को जीवन में स्थान देना जैसे गुणों को मुखरित करके हम उन्हें आर्य समाज से जोड़ सकते हैं और उनको नव-जीवन प्रदान कर सकते हैं, अतः इस बार अधिक से अधिक युवा हमारे कार्यक्रमों में आने चाहिए।

वेद प्रचार सप्ताह के दिनों में प्रतिदिन स्वच्छता अभियान चलायें अपने पास पड़ोस के क्षेत्रों में स्वयं सफाई करें तथा अन्य व्यक्तियों को प्रेरित करें कि वे अपने पास-पड़ोस के क्षेत्र को सदैव स्वच्छ रखें।

स्वामी जी ने देश-विदेश में फैल रहे पर्यावरण प्रदूषण को दूर करने के लिए इस अवसर पर अधिक से अधिक वृक्षों को लगाने का भी आह्वान किया उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति कम से कम एक पौधा अवश्य रोपित करे और पर्यावरण के सम्बन्ध में लोगों में जागृति लाने का प्रयास करे।

हम आर्य समाजी इस अवसर पर कुछ अलग करके दिखायें जिससे आम जनों में आर्य समाज की एक अलग छवि निर्मित हो और लोग हमसे प्रभावित हों। यदि वेद प्रचार सप्ताह के दौरान कुछ नये व्यक्तियों को हम आर्य समाज से जोड़ पायें तो यह वेद प्रचार सप्ताह मनाना सफल माना जायेगा।

5 सितम्बर, 2015 को श्री कृष्ण जन्माष्टमी के अवसर पर विशेष यज्ञ की पूर्णाहुति तथा भगवान श्री कृष्ण जी के वैदिक स्वरूप का दिग्दर्शन विस्तृत रूप से आम जनता को कराया जाये जिससे भगवान श्री कृष्ण के सच्चे स्वरूप का ज्ञान लोगों को प्राप्त हो तथा उनके बारे में फैली हुई भ्रांतियां दूर हों।

आर्य समाज का मुख्य कार्य वेद प्रचार, मानव निर्माण, राष्ट्र निर्माण तथा सत्य धर्म का प्रचार करना है। वेद का पढ़ना और पढ़ाना, सुनना और सुनाना प्रत्येक आर्य का परम धर्म है अतः वेद मय होकर दयानन्द के भक्तों आगे बढ़ो और वेद प्रचार करो। सार्वदेशिक सभा ने वेदों को जन-जन के हाथों में, प्रत्येक परिवार में, पुस्तकालयों में, विद्यालयों तथा कालेजों की लाइब्रेरियों में पहुंचाने का संकल्प लेकर सस्ते मूल्य पर देने का निश्चय किया है। इस वेद प्रचार सप्ताह के अवसर पर आर्य समाज के प्रत्येक सदस्य के पास वेद पहुंचाने का यत्न करें और अपने मित्रों, सम्बन्धियों को भी प्रेरित करें कि वे इस योजना का लाभ उठायें। अधिक से अधिक संख्या में आदेश भेजकर वेदों को अपने घर में लाकर उसे पवित्र करें और प्रतिदिन वेदों के स्वाध्याय का व्रत लें।

आर्य समाज तथा सार्वदेशिक सभा की गतिविधियों की जानकारी प्राप्त करने के लिए सार्वदेशिक सभा के मुखपत्र "वैदिक सार्वदेशिक" के स्वयं ग्राहक बनें तथा अन्य व्यक्तियों को ग्राहक बनाने का प्रयास करें। "वैदिक सार्वदेशिक" का वार्षिक शुल्क 250/- रुपये तथा आजीवन शुल्क 2500/- रुपये मात्र है। अपने आर्य समाजों द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की सूचना चित्र सहित प्रकाशित करने के लिए अवश्य भेजें जिससे आर्य जगत की गतिविधियों का प्रचार-प्रसार हो तथा अन्यों को प्रेरणा प्राप्त हो सके।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

आओ हम सब मिलकर श्राद्ध व तर्पण करें

यह लेख आचार्य महावीर जी ने पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी के असमय प्रयाण से पूर्व लिखा था जिसे अविकल रूप से प्रकाशित किया जा रहा है। – सम्पादक

मेरे प्रियजनों, हृदय में स्थित आत्मीय जनों, ऋग्वेद के अन्दर वर्णित तथा पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी महाराज द्वारा व्यवहार में अवतरित कार्यरूप में परिणित दुर्लभ शारद यज्ञ के विषय में पूज्य स्वामी जी हर वर्ष अपने निमंत्रण पत्रों में विस्तृत रूप से चर्चा करते रहते थे। उसकी उपयोगिता, उसके महत्त्व के विषय में बताते रहे हैं और श्रद्धापूर्वक हर वर्ष इस यज्ञ को करते रहे हैं। यहां तक की एक बार नौ दिन व नौ रात्रियों तक इसे निरन्तर किया। यह यज्ञों के प्रति पूज्य स्वामी जी का समर्पण था। औरंगजेब के भाई दारा ने जब उपनिषद् पढ़े, उनमें भरे ज्ञान से उसका साक्षात्कार हुआ, तो वह सड़को पर नाचने लगा। यह कहते हुए नाचने लगा कि मिल गया, मिल गया मुझे सब कुछ मिल गया। जीवन में जो प्राप्तव्य है, वह सब मिल गया। ज्ञान का खजाना मिल गया, सुख व शांति का सार मिल गया, अब मुझे और कुछ नहीं चाहिए। ठीक इसी प्रकार स्वामी जी ने अपने स्वाध्याय में, वेदों, उपनिषदों, स्मृतियों व दर्शनशास्त्रों में यज्ञ की महिमा को पढ़ा, यज्ञ के विषय में जाना तो उन्होंने भी उन्मुक्त भाव से यज्ञों के प्रति अपने आपको समर्पित कर दिया। अपने जीवन को यज्ञमय बना दिया। यज्ञों को अपने जीवन में उतार दिया, उतारा ही नहीं उन्हें जन-जन के आकर्षण का विषय बनाने का उपक्रम भी करने लगे। यानि वृहत्तर यज्ञों का आयोजन भी करने लगे। मठ में निर्मित भव्य यज्ञशाला का उद्घाटन ही सवा करोड़ गायत्री मंत्रों की आहुतियों से किया गया जो कि लगातार साढ़े पांच मास तक निरन्तर चला। तत्पश्चात् एक वर्ष तक निरन्तर चलने वाले यज्ञ का आयोजन किया गया। इसी बीच वेदों का पारायण करते हुए, बीच-बीच में विशेष विषयों को लिए उपस्थित वेद मंत्रों की व्याख्या करते, उन पर प्रवचन देते हुए, ऋग्वेद में वर्णित शारद यज्ञ की ओर इंगित करने वाला मंत्र उपस्थित हुआ। उस पर स्वामी जी ने चिन्तन किया, मनन किया, तत्पश्चात् उस पर प्रवचन दिया तो तभी संकल्प कर बैठे कि हम इस यज्ञ को करेंगे। हर वर्ष करेंगे, और श्रद्धा व निष्ठा से करेंगे। देश, जाति व समाज के कल्याण के लिए करेंगे। विश्व भर के तथा प्राणिमात्र के कल्याण के लिए करेंगे। तभी से यह यज्ञ मठ में निरन्तर हो रहा है। इसके बाद डेढ़ वर्ष तक निरन्तर चलने वाले यज्ञ का भी आयोजन किया गया। जिसकी सुगन्धि वन, उपवनों से आज भी प्रवाहित हो रही है। जिनमें उच्चरित पवित्रवेद मंत्रों की ध्वनियाँ पर्वतों से गिरिगहवरों से टकरा कर प्रतिध्वनित हो रही है। दिग-दिगान्तरों को गुंजायमान कर रही है। यह तो रही पूज्य स्वामी जी महाराज के कृतित्व व व्यक्तित्व की संक्षिप्त झलक। अब वे अशक्त हैं पर भावना तो वही है। उत्साह में तो कोई कमी नहीं है। उन यज्ञों की नैर्यन्तरता के लिए चिन्तातुर है। हृदय में व्याकुलता लिए हुए हैं। मेरे बाद भी यज्ञों का यह क्रम चलता रहेगा, इस बात से सुनिश्चित होना चाहते हैं। इसकी अभिव्यक्ति तो नहीं करते पर हृदय में इस चाहत को लिए उनका मन व्याकुल है, यह हम जानते हैं। अब हम सभी का जो उनसे प्रीति रखते हैं, उनके कार्यों को सराहते हैं, जो उन्हें अपना गुरू मानते हैं अथवा उनके प्रति श्रद्धाभाव रखते हैं। समष्टिगत उनके कार्यां में जो भागीदार बनना चाहते हैं, संसार के उद्धार व प्राणिमात्र के कल्याण के लिए यह कार्य है, यह स्वीकार करते हैं। कर्त्तव्य बनता कि उनके कार्यों में गतिशीलता बनाए रखें, उन्हें आगे बढ़ाएँ।

अब ऋग्वेद के प्रथम मंत्र से अपनी बात को शुरू करता हूँ। वह मंत्र है - अग्निमीडे - हम अग्नि की उपासना करते हैं, उप+आसन अर्थात् हम अग्नि के समीप बैठते हैं। समीप बैठने से तद्गुण तद्स्वभाव मनुष्य के अन्दर स्थानांतरित होने शुरू हो जाते हैं। अग्नि के समीप बैठने से आत्मबल बढ़ता है, भय व आशंका दूर होती है और मार्गदर्शन प्राप्त होता है। अग्नि के गुण समाज में जिन-जिन में भी घटते हैं। वे सभी अग्नि स्वरूप है। समाज में विद्यमान भय और आशंका को दूर करने वाले जो महापुरुष हैं, हम लोग उनका दामन पकड़े उनके समीप बैठें। उनके मार्गदर्शन में अपने जीवन को चलाएँ। श्रद्धापूर्वक उनका अनुगमन करते हुए तदनुकूल व्यवहार और आचरण करते हुए उन्हें तृप्त करें। इसी को श्राद्ध और तर्पण कहते हैं। यह कर्म जीवित पुरुष की विद्यमानता में किया जाए जो लाभकारी है अत्युतम है, सार्थक है। मृत्यु के पश्चात् भी किया जाए तो हानिप्रद नहीं है। बशर्ते जीते जी भी यह कर्म उसके सामने किया जाता रहा हो।

जीते जी दंगम दंगा मरने के बाद पहुँचाए गंगा वाली बात नहीं। मनुष्य जीते जी सूखी रोटी के लिए भी तरसता रहा। मरने के बाद उत्तम से उत्तम पकवानों से ब्राह्मणों को उसके नाम पर भोग करवाया जाता है, यह ठीक नहीं। अपने आराध्यों को, अपने पूज्यों को, अपने बुजुर्गों को जीते जी ही श्रद्धापूर्वक उनकी सेवा सुश्रुषा से तदनुकूल कर्मों से तृप्त करना चाहिए। उन्हें संतुष्ट करना चाहिए, यही श्राद्ध और तर्पण का अभिप्राय है।

महाराणा प्रताप मृत्यु शय्या पर लेटे हैं। लम्बी-लम्बी श्वासें छोड़ते हुए सामने टक टकी लगाये बैठे हैं। प्राण नहीं निकल पा रहे। चाहते हुए भी प्राण नहीं निकल रहे हैं। राणा के चारों ओर बैठे उनके वफादार सामन्त राणा के एक-एक गतिविधि पर ध्यान टिकाए हुए हैं। टक-टकी लगाए बैठे हैं वे भांप गए जरूर राणा के हृदय में कोई असह्य पीड़ा है। जिसके कारण प्राण नहीं निकल पा रहे हैं। कोई महत्त्वपूर्ण जिज्ञासा है। जिसके समाधान के बिना वह देह नहीं छोड़ना चाहते। कोई ऐसी बात है जो उन्हें काटे जा रही है। सामंतों ने बेबस आंखों से विराने में ताकते हुए राणा से, उदासी लिए हुए मुरझाए चेहरे वाले राणा से जब पूछा - राणा बताओ आपके मन में क्या व्यथा है, कौन सी पीड़ा है जिसके कारण आप व्यथित हो, उदासी लिए हुए हो। जीवन भर आपके हर आदेश पर प्राणों का भी उत्सर्ग करने वाले हम लोगों के लिए आपका क्या आदेश है? वह कौन सा प्रिय कर्म है जिसे हम पूरा कर कण्ठ में अटके आपके प्राणों को खुशी-खुशी निकलने में सहायक हो सके। आपकी व्यथा, आपकी लाचारी हमसे देखी नहीं जा रही। तब राणा ने सभी सामन्तों की ओर नजरें घुमाकर अपने समीप आने को कहा। सभी सामंत राणा के समीप आ गए। समीप में आए सभी सामन्तों को राणा ने कहा - मेरे प्रिय सामन्तों। आप लोगों ने अनेक कष्टों को झेलकर भी जीवन भर मेरा साथ दिया। मातृभूमि की आजादी के लिए अपना घरवार, अपनी सुख-सुविधाएँ सब न्यौछावर कर दिए। आज मेवाड़ की आजादी शेष है। मेरा बेटा अमर सिंह इस योग्य नहीं है कि वह मेवाड़ को आजाद करा सके। मैं मेवाड़ की आजादी का अधूरे स्वप्न को लिए जाने को तैयार हूँ। यह टीस मेरे दिल में है जिसके कारण प्राण नहीं निकल पा रहे हैं। आप लोग मुझे भरोसा दो कि मेरे अधूरे स्वप्न को आप लोग अपने प्राणार्पण से पूरा करेंगे। यह सुनकर सभी सामंतों ने अपनी-अपनी तलवारों के मुंठ पर हाथ रखकर राणा के सामने प्रतिज्ञा की कि हे राणा हम आपके वफादार सामंत प्रतिज्ञा करते हैं कि हम मेवाड़ की आजादी के लिए संघर्ष करते रहेंगे। जब तक मेवाड़ आजाद नहीं हो जाता तब तक हम न तो घरों में सोयेंगे, न ही धातुओं के बर्तनों में खाना खायेंगे। मेवाड़ की आजादी ही हमारे जीवन का लक्ष्य होगा और उसके लिए हम संघर्ष करते रहेंगे। यह सुनकर राणा के मुख पर उदासी के स्थान पर प्रसन्नता ने स्थान ले लिया। मुरझाया हुआ राणा का चेहरा एक आलौकिक तेज से दमकने लगा। चिन्ता व दु:ख के ज्वार भाटों से आन्दोलित हृदय सहसा ही शांत हो गया। कष्ट में अटके प्राण आसानी से निकल गए। राणा ने आश्वस्त होकर प्राण त्याग दिए। सामंतों से अपने उत्तरदायित्व को पूरा करने का वचन लेकर राणा इहलोक से परलोक की ओर कूच कर गए। राणा के सामंतों ने श्रद्धा से राणा के कार्यों को पूरा करने का वचन लेकर राणा द्वारा चलाए आजादी के मिशन को जारी रखने की कसमें खाकर राणा को तृप्त कर दिया। प्रियवरों यह है श्राद्ध व तर्पण।

मेरे आत्मीय जनों कई लोग पूछते हैं कि क्या इस बार भी शारद यज्ञ होगा? उनका यह प्रश्न पुत्र ऋषि कुमार के दिवंगत हो जाने के कारण होता है। मैं उत्तर देता हूँ कि शारद यज्ञ होगा। जिस यज्ञ को स्वामी जी महाराज ने बड़े ही श्रद्धा व भक्ति से भरकर आरम्भ किया, जिसको पूरा करने के लिए प्रिय पुत्र ऋषि कुमार ने अपने आपको हमेशा आगे ही आगे रखा। जिसकी सफलता के लिए रात-दिन एक कर देता था। महान याजक पूज्य स्वामी जी महाराज के आदेश को शिरोधार्य कर पूरे शारद यज्ञ के यजमान के आसन पर सोत्साह शोभायमान होता था। उस शारद यज्ञ को कैसे छोड़ सकते हैं। जिस शारद यज्ञ को प्राणिमात्र के कल्याण के लिए किया जाता है। जिस शारद यज्ञ को राष्ट्र की वृद्धि व समृद्धि के लिए किया जाता है। जिस शारद यज्ञ को देवों-पितरों की तृप्ति के लिए किया जाता है, जिस शारद यज्ञ में समर्पित हव्य की सुगन्धि से द्युलोक व अंतरिक्ष लोक सहित पृथ्वी लोग प्रपूरित हो जाती है। जिसकी सुगन्धि को हवाएं अपनी अन्तिम सीमा तक पहुंचाकर सूर्य की किरणों को समर्पित कर देते हैं और सूर्य की किरणें जिन्हें लोकान्तरों तक पहुंचा देती हैं। जिसमें समर्पित अपने भाग को ग्रहण करने के लिए दिव्य लोकों में रहने वाली दिव्य आत्माएँ, देवगण, पितृगण, ऋषि, महर्षिगण प्रतीक्षारत रहते है ऐसे शारद यज्ञ को कैसे छोड़ दें। प्रिय बेटे के वियोग में इसे त्यागने की अपक्षा इसे और भी उत्साह व उमंग में भरकर श्रद्धा से करना चाहिए क्योंकि उन देवों पितरों की श्रेणी में वह भी विद्यमान होगा। जिस शारद यज्ञ को वह निष्ठा से करता रहा। अपने द्वारा प्रदत्त हवियों से दिव्य पुरुषों को तृप्त करता रहा जिनके परिणामस्वरूप उन दिव्य जनों ने उन दिव्य लोकों में उसे स्थान दिया। अपने पास बुलाया, आज वह भी उन दिव्य पुरुषों के साथ बैठा इस शारद यज्ञ की प्रतीक्षा में होगा। इसमें प्रदत्त हव्य को देवों, पितरों के साथ ग्रहण करने के लिए लालायित होगा। हम उन्हें निराश कैसे कर सकते हैं। इस यज्ञ के माध्यम से उन दिवंगत आत्माओं का, दिव्य पुरुषों का, देवों पितरों का भोग अवश्य होगा। उन्हें तृप्त करने का उपक्रम अवश्य होगा। मेरे प्रिय जनों आओ हम सब लोग मिलकर इस यज्ञ को श्रद्धा भक्ति से करें, पूरी निष्ठा से करें। यज्ञ की सुगन्धि से जहाँ सुगन्धित सुरमियाँ बहेंगी, दिव्यजन तृप्त होंगे। वहीं स्वामी जी महाराज भी आश्वस्त होंगे कि मेरे बाद भी यह यज्ञ होता रहेगा, उनकी आत्मा तृप्त हो जायेगी। इसके बाद जब भी वे दिव्य लोकों की ओर प्रस्थान करेंगे, तो पूर्णरूप से निश्चिन्त होकर प्रस्थान करेंगे। चिन्ता व आशंका का भाव उनके मन में नहीं रहेगा। यही हमारा उनके लिए श्राद्ध व तर्पण होगा। प्रिय पुत्र ऋषि कुमार भी संभवत: यही सोचकर कि पूज्य पिता जी यानि मैं आप सबके साथ मिलकर पूज्य स्वामी जी महाराज को श्राद्ध व तर्पण कर जब यहाँ से विदा करें, तो वह अन्य दिव्यजनों के साथ मिलकर दिव्य लोगों में उनका स्वागत करेंगे। उनके लिए स्थान सुरक्षित रखेंगे। सौ यज्ञों को पूर्ण करने के बाद जब राजा नहुष को स्वर्ग में ले जाए जाने लगा तो इन्द्र ने उन्हें स्वर्ग में स्थान नहीं दिया, उन्हें स्वर्ग में नहीं आने दिया। यही स्थिति स्वामी जी के साथ न हो इसीलिए स्वामी जी का चहेता, हम सबका लाडला, ऋषि कुमार स्वामी जी से पूर्व ही चला गया। मेरे प्रिय जनों सभी आज से ही यज्ञ में भाग लेने का मन बना सीटें आरक्षित कर लो। यज्ञमान के इच्छुक याज्ञक पूर्व ही नाम प्रेषित कर दें। रहने व खाने की सुविधा को न देखें। इन सबमें असुविधा भी हो सकती है, क्योंकि इस समय मैं अकेला हूँ। अधूरा हूँ। हाँ आप सबका भरपूर सहयोग मिला तो सब ठीक भी हो सकता है पर लक्ष्य तो यज्ञ का बना कर आएं। सुख-सुविधाओं की आशाएं न लगाएं, हो सकता है कि आप लोगों के लिए गद्दे भी सुलभ न हो पाएं, हो सकता है नंगी भूमि पर ही सोना पड़े, हो सकता है भोजन की अच्छी सुविधा भी न हो पाए, हो सकता है उपवासी भी रहना पड़े। भर्तृहरि जी के शब्दों में - क्वचिद भूमौशय्या क्वचिदपि च पर्यंक शयनम् क्वचिद शाकाहारी क्वचिदपि शाल्योदन रुचि। क्वचिद कंथाधारी क्वचिदपि च दिव्याम्बर धर। मनस्वीकार्यार्थी गणयति सुखं न च दु:खम्। अत: इस बात की परवाह किए बिना यज्ञ को लक्ष्य बनाकर आएं। निष्ठा से, श्रद्धा से, तन्मयता से यज्ञ करने के लिए आएं। प्राणीमात्र के कल्याण के लिए, अपने कल्याण के लिऐ इस यज्ञ में भाग लेने के लिए आएं। पूज्य स्वामी जी के प्रयासों को आगे भी जारी रखने के लिए आएं। इस महान यज्ञ में शामिल होकर महान पुण्य के भागी बन इसमें श्रद्धा से आहुतियाँ समर्पित कर जहां अपने महान सुख-सौभाग्यों को जगाने का उपक्रम करोगे, वहीं पूज्य स्वामी जी महाराज को अपनी श्रद्धा व समर्पण से तृप्त करोगे। देवो व पितरों के आशीर्वाद के भागीदार बनोगे और अपने प्रिय व लाडले ऋषि कुमार के प्रति भी अपनी श्रद्धांजलि समर्पित करोगे। ऋषि कुमार ही क्यों और भी हमारे प्रियजन जो इस समय हमारे बीच नहीं रहे उनके प्रति भी श्रद्धासुमन अर्पित करोगे। यज्ञ महान कर्म है, इसमें हर प्रकार से लाभ ही लाभ है। सब ओर से कल्याण ही कल्याण है। अत: अवसर को चूके नहीं। ऋग्वेद में निर्दिष्ट, महान याजक पूज्य स्वामी जी द्वारा आरम्भित, इस महान यज्ञ में अवश्य भाग लें। हर अवस्था में भाग लें, यदि परिस्थितिवश भाग न ले सकें तो अपना भाग इसमें अवश्य डालें। इससे पीछे न हटें। सौभाग्य आपके दरवाजे पर दस्तक दे रहा है, उसे वापस न जानें दें।

ऋग्वेद में निर्दिष्ट यज्ञ में कुछ परिवर्तन :- प्रियजनों पूज्य स्वामी जी महाराज के पास मैं व मेरा बेटा था। जिसके परिणामस्वरूप वे एक स्थाई यज्ञमान के लिए प्रतिज्ञावद्ध होते थे। पर इस बार स्थिति अलग है, बेटा रहा नहीं। स्वामी जी बिस्तर पर पड़े हैं। मैं हूँ एकाकी। मेरा पहले भी मानना था कि दीर्घकालिक यज्ञों में, लम्बे समय के यज्ञों में स्थाई बैठने वाले यज्ञमान मिल जाते हैं तो ठीक, नहीं तो अंशकालिक यज्ञमानों को भी स्थान दिया जाना चाहिए। ध्येय यज्ञ होना चाहिए, यज्ञ की पूर्णता, यज्ञ की सफलता ध्येय होना चाहिए। यज्ञ में विघ्न बाधा उपस्थित न हो, उसकी नैर्यन्तरता चलती रहे यह ध्येय होना चाहिए और वह जिस रूप में भी पूर्ण हो वह उपक्रम श्रेयस्कर है। युद्ध का बिगुल बज जाता है। सेनाएँ एक दूसरे से टकराने लगती हैं। युद्ध में विजय पाना ही सबका ध्येय होता है। इसके लिए अग्रिम मोर्चों पर लड़ रही सेनाओं को विश्राम के लिए पीछे बुलाया जाता है। उनके स्थान पर दूसरे सैनिकों को मोर्चे पर भेजा जाता है, जो तरोताजा होते हैं, जो दुगुने साहस से लड़ सकते हैं। युद्ध चलता रहता है वह रूकता नहीं। योद्धाओं में अदला-बदली होती रहती है, ऐसे ही दीर्घकालिक यज्ञों में भी होना चाहिए। यह मेरी धारणा है। उसी रूप में इस बार इस यज्ञ को करने का प्रयास करूँगा। यज्ञमान बनने के इच्छुक व्यक्ति पूर्व ही अपना नाम प्रेषित कर दें। यज्ञमान सपत्नीक हो तो अत्युत्तम। अभाव में एकांगी को भी अवसर दिया जायेगा। जीवन रूपी यज्ञ जब एकांगी होने पर भी चल सकता है। शास्त्र उसे जीने का अधिकार देते हैं। तो प्रतीक रूप इस यज्ञ में भी एकांगी यज्ञमान भी बैठने का अधिकारी होना चाहिए। जैसे जीवन जीने का उसे अधिकार है, वैसे ही यज्ञ करने का भी उसे अधिकार होना चाहिए। यह अधिकार उससे छीना नहीं जाना चाहिए।

यज्ञ का दिन व समय :- प्रियजनों वार्षिकोत्सव का यज्ञ 10 अक्टूबर, 2015 को प्रात: साढ़े छ: बजे प्रारम्भ हो जायेगा। जोकि साढ़े नौ बजे तक चलेगा। सायंकाल चार बजे से सात बजे तक चलेगा। 12 अक्टूबर, 2015 को सायंकाल वार्षिक यज्ञ की पूर्णाहुति हो जायेगी।

13 अक्टूबर, 2015 को प्रथम नवरात्रे को प्रात: साढ़े छ: बजे से ऋग्वेद में वर्णित पूज्य स्वामी जी द्वारा व्यवहार में परिणत, समाज में बहुचर्चित दुर्लभ शारद यज्ञ आरम्भ हो जायेगा। जिसका सफर ब्रह्ममुहूर्त में उषाकाल छ: बजे से प्रारम्भ होकर मध्याह्न सायं, रात्रि के चारों पहरों से अनवरत गुजरता हुआ 14 अक्टूबर, 2015 को ब्रह्ममुहूर्त उषाकाल प्रथम सूर्योदय का साक्षात्कार कर नौ बजे पूर्णाहुति के साथ सम्पन्न होगा।

सहयोग के इच्छुक व्यक्ति निम्न प्रकार से सहयोग कर सकते हैं :-

1.	पूर्णकालिक यज्ञमान	:	पांच पीपे घृत द्वारा सहयोग।
2.	अंशकालिक यज्ञमान	:	1 पीपा घृत द्वारा सहयोग।
3.	ढाई क्विंटल सामग्री	:	200/- के हिसाब से 50,000/-
4.	समिधाएँ	:	25 क्विंटलX600/-=15,000/-
5.	दक्षिणाएँ	:	1,00,000/-
6.	भोजन, नाश्ता आदि पर	:	80,000/-
7.	सज्जा टैन्ट आदि पर	:	30,000/-
8.	कर्मकारों को	:	20,000/-
	कुल खर्चा	:	**3,70,000/-**

निवेदक - आचार्य महावीर सिंह, प्रबन्धक, दयानन्द मठ चम्बा, मो.:-9805022871

सौम्यता की प्रतिमूर्ति सन्त शिरोमणि स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती (चम्बा)

– स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती

धीर-वीर-गम्भीर वाणी से भक्तजनों को सात्विकता प्रदान करने वाले वैदिक परम्परा के संवाहक, दयानन्द मठ चम्बा (हिमाचल प्रदेश) के संचालक, दीर्घसत्र वाले यज्ञों के परिषेक्ता आर्य समाज के संगठन में सर्वोच्च पद पर प्रतिष्ठित स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती के मात्र स्मरण से ही स्वाभाविक सात्विकता के भाव जागृत हो जाते थे उनके नाम में विशेष ऊर्जा थी जब वे किसी भी मंच से बोलते थे तो माधुर्य एवं प्रसाद गुण युक्त उपदेश सीधा हृदय को प्रभावित करता था आपकी सहजता ही आपकी पहचान थी। आपका ओजस्वी-तेजस्वी मुख मण्डल आबालवृद्ध को उनके प्रति श्रद्धा हेतु प्रेरित करता था। लम्बा कद एवं गैरिक वस्त्रों की आभा तथा सिर पर हल्की पगड़ी शोभा में सोने पर सुगन्धि का कार्य करती थी। स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी सरस्वती जो आर्यजगत् के इतिहास में लौह पुरुष के नाम से प्रसिद्ध हुए हैं उनकी धारणा और विश्वास था कि पूरे देश में आर्य समाज के कार्य को उत्तम गति प्रदान करने के लिए मठों की स्थापना की जाये उसी श्रृंखला में दयानन्द मठ दीनानगर में बनाया गया जहाँ स्वनाम धन्य पूज्य स्वमी सर्वानन्द जी सरस्वती ने अपने जीवन की आहुति लगाकर उस पौधे को अभिसिंचित किया था और आजीवन दयानन्द मठ को ही केन्द्र बनाकर समाज सेवा का संकल्प पूरा किया। इसी प्रकार रोहतक में भी दयानन्द मठ की स्थापना की गई। पूज्य स्वामी सोमानन्द जी महाराज वहाँ आजीवन रहे और समाजसेवा की बाद में पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज भी वहाँ पर रहकर साप्ताहिक सत्संग लाभ आर्य जनता को प्रदान कराते रहे। यहाँ सभा कार्यालय तथा राजनीति के प्रवेश से वह मठ अपने गौरव को सुरक्षित नहीं रख पाया जैसे कि दीनानगर में रहा और हिमाचल प्रदेश में चम्बा नामक स्थान पर स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती जब से प्रतिष्ठित हुए आपने तभी से आस-पास के पूरे क्षेत्र को शिक्षा क्षेत्र में वेद प्रचार यज्ञ, योग तथा समाज सेवा के क्षेत्र में स्वामी जी की विशेष प्रतिष्ठा रही है। पिछले कई वर्षों से आप यज्ञ नवरात्रों में एवं शरद पूर्णिमा के अवसर पर विशेष अनुष्ठान करते रहे हैं। आप यज्ञ महिमा से सुपरिचित हुए और अपने सभी भक्तजनों को प्रेरित करके पुण्यलाभ प्रदान कराते रहे हैं। आप सरल और सहज भाव से अपने उपदेशामृत द्वारा आर्य जनता का मार्ग दर्शन करते रहे आपके आश्रम में गुरुकुल, विद्यालय, यज्ञशाला, गौशाला एवं वेद प्रचार का कार्यक्रम अतिथि सेवा द्वारा तथा सदैव दीन-दु:खी एवं बे-सहारा लोगों की सेवा का संकल्प लेकर आप अपने जीवनरूपी यज्ञ को जीवन्त बनाते रहे। मेरा परिचय बहुत पुराना है। पूज्य गुरुदेव स्वामी मुनीश्वरानन्द जी के पास आपका पत्र व्यवहार होता रहता था तभी से मैं सुपरिचित रहा हूँ और दिल्ली के कई कार्यक्रमों में सम्मेलन एवं बैठक में साथ-साथ रहने का सौभाग्य मिला है। अभी पिछले दिनों जब सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा,

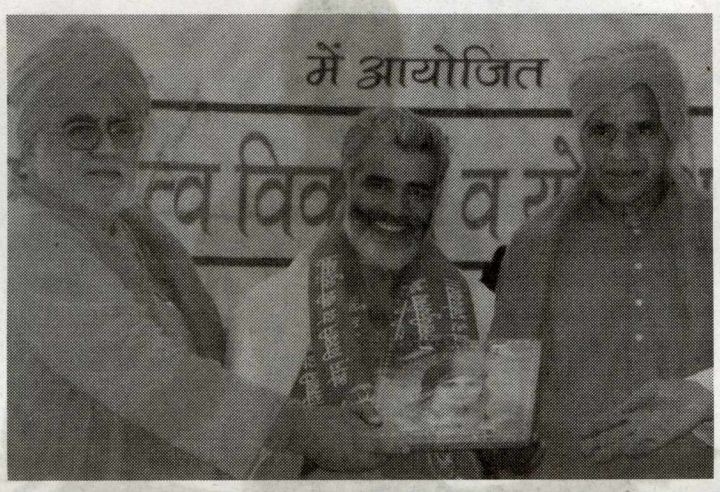

नई दिल्ली में विवाद प्रारम्भ हुआ तब आपको संयोजन समिति का अध्यक्ष बनाया गया था उस अवसर पर कई बैठकों में भी स्वामी जी का दर्शन लाभ मिला और विचार-विमर्श एकान्त में लम्बे समय तक हुआ। स्वामी जी की हार्दिक विशेष इच्छा थी कि आर्य समाज एवं सभाओं के विवाद समाप्त हों आर्य जनता पूर्ववत् सभाओं के प्रति आश्वस्त हों तथा स्वयं जीवन के निर्माण हेतु आर्यत्व का व्यवहार अनुभव हो, आर्य परिवारों का निर्माण एवं आर्य समाजों से स्वार्थ की भावना समाप्त हों, परस्पर आत्मीयता एवं स्नेह का वातावरण पैदा किया जा सके। स्वामी जी किसी भी पद के लिए उत्सुक नहीं थे लेकिन आर्य नेता तथा आर्य जनता का पूर्ण विश्वास था कि स्वामी जी किसी वर्ग अथवा दल-दल में नहीं हैं, समान रूप से सभी सम्मान करते थे। श्रद्धा से नमन करते थे, आज ऐसे समय में उनका अभाव आर्य समाज के लिए बड़ी असह्य क्षति है।

आपके निर्देशन में हिमाचल प्रदेश में जो समाज सेवा की गतिविधियाँ संचालित रही हैं उनके लिए भी एक बड़ा आघात है आर्य समाज में पुरानी पीढ़ी के संन्यासी, विद्वान्, उपदेशक, कार्यकर्ता क्रमश: कम हो रहे हैं। योजनानुरूप भावी पीढ़ी का निर्माण नहीं हो रहा है। यह चिन्ता का विषय है। स्वामी जी बहु आयामी व्यक्तित्व के धनी थे आपके निर्देशन में अभी आर्य समाज को नई दिशा के साथ आगे बढ़ना था, सार्वदेशिक सभा का भी विवाद समाप्त होना चाहिए, स्वामी जी को श्रद्धांजलि के रूप में सभाओं के सभी नेताओं द्वारा इस विषय पर गम्भीरता से चिन्तन करने की आवश्यकता है। क्रमश: हमें भी इसी पथ का पथिक बनना है इस शाश्वत सत्य को कोई झुठला नहीं सकता, आने वाली पीढ़ी हमारे इस कार्य के प्रति कैसा चिन्तन करेगी? इतिहास कभी किसी को क्षमा नहीं करता। अत: यह एक अच्छा अवसर है कि आप सभी महर्षि दयानन्द जी के मानस पुत्र होने के नाते चिन्तन अवश्य करें। हमसे पुरानी पीढ़ी ने जो आर्य समाज की उन्नति के लिए संघर्ष किया है बलिदान दिया, कष्ट सहन किये, मान-अपमान सहा और आर्य समाज की प्रतिष्ठा बढ़ाई। स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती एक सच्चे सेनानी के रूप में आये और सेनानी बनकर रहते थे। आज भी आर्य जनता के लिए श्रद्धास्पद सेनानी थे। उन्होंने कभी विपत्ति में धैर्य नहीं छोड़ा अपनी बात की कभी जिद्द नहीं की, कभी क्रोध अथवा आवेश में आकर अपनी संन्यास की गरिमा को कम नहीं होने दिया। वे हिमाचल प्रदेश में क्या पूरे भारतवर्ष में सम्मान के साथ आमंत्रित किये जाते थे वे अजातशत्रु विद्वान् सच्चे संन्यासी थे। मेरा तो सदैव उत्साहवर्धन किया करते थे। स्वामी आर्यवेश जी के साथ लम्बे समय तक सार्वदेशिक सभा कार्यालय द्वारा आर्य जगत के मार्गदर्शक बनकर पूरे देश में हिमाचल प्रदेश एवं दयानन्द मठ चम्बा की पहचान थे और पर्यायवाची बनकर आर्यत्व की रक्षा के लिए संघर्ष करते रहे। स्वामी सुमेधानन्द जी ने सार्वदेशिक स्तर पर पहुंचकर सार्वदेशिक सभा को भी गौरवान्वित किया। कुछ लोग पद प्राप्त कर प्रतिष्ठित होते हैं, कुछ लोगों से पद की गरिमा बढ़ती है। ऐसे ही संन्यासी शिरोमणि हमारे स्वामी जी थे जिन्हें पद प्राप्त कर पद भी गौरवान्वित हुआ। उनकी स्मृतियाँ मानस पटल पर बार-बार आकर मुझे प्रेरित करती हैं कि उनके विषय में लिखो। वर्ष 1977 में आर्य जगत के मनीषी विद्वान् व्याकरण सूर्य महात्मा देव स्वामी जी उत्तर प्रदेश के मैनपुरी जनपद में गुरुकुल सिरसागंज के संचालक का कुछ आतंकवादियों ने बलिदान कर दिया था उस समय एक आचार्य इनके आश्रम में पहुंचे थे तब स्वामी जी को हमने सारी कहानी सुनाई तो आपने स्पष्ट शब्दों में उन्हें आश्रम प्रवेश निषिद्ध कर दिया था। तभी अचानक संयोगवश पर्वतीय नदी में जल आने से वे काल कवलित हो गए थे। स्वामी जी सदैव सत्य एवं धर्म मार्गानुयायी थे आप जैसे मूर्धन्य शिरोमणि सन्त की अभी आर्य समाज के संगठन हेतु महती आवश्यकता थी पर प्रभु इच्छा बलीयसी स्वीकार कर उनके सत्कर्मों के प्रति उनकी साधना के प्रति उनकी विद्या एवं तप के प्रति आर्यत्व के संवर्द्धन हेतु समर्पण के प्रति मैं आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश की ओर से 'आर्य मित्र' परिवार की ओर से गुरुकुल पूठ परिवार की ओर से तथा समस्त सन्त-साधु-संन्यासी वर्ग की ओर से उन्हें सादर श्रद्धा समर्पित करता हुआ परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि प्रभु हमें भी शक्ति प्रदान करो जो गुरुवर महर्षि के कार्य को आगे बढ़ाते हुए पूर्वजों के अनुगामी बनकर जीवन सार्थक कर सकें।

– मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश,
मो.:-9837402192

Through Remembrances

Maharishi Dayanand Saraswati

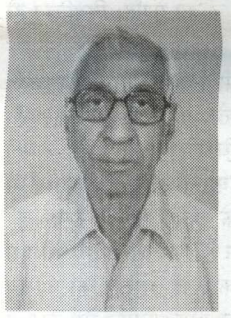

1. Maharishi Dyanand - On *Deepavali Day Known as a Nirvaan Divas* was celebrated in all the Arya Samajistic functions in India and abroad.

Actually, his passing away from this world was regarded through this satisfaction that the world has begun to return to the Vedas-the heartiest will of Maharishi Dayananad Saraswati, otherwise it was a great loss that Swami Dayananad is no more with us. Even then, his ideology, comprising God, Spirit and nature (Traitwad), is unparalelled and that is logically tested on the Vedas.

Above all, he wanted to see Bharat as an independent country in all respects that is Economically, Technolgically, Socially and spiritually.

From Ist to 15th November Jan Chetna Yatra took place to highlight the ideology of Maharishi Dayanand. He was a staunch advocate to women who give birth to men. Even Gandhi Ji drew the idea of women's regeneration from Maharishi Dayanand. Maharshi Ji was the first supporter of Girls' education. He came forward to defend the case of women. So why is there killing of girl's entity from the woman's womb. It is crime as well as a sin.

2. J. L. Nehru - The Birth Anniversary of Pt. Nehru was celebrated on 14th November as 'Universal Children's Day'. This great Architect of modern India whom we lovingly call 'Chacha Nehru' was born on this day in Allahabad.

He was a great political fighter. He brought about the 'Punch sheel' in establishing peace and sympathy, love and harmony among the countries of the world. He was called as a bridge between east and west. He had a balancing attitude. 'Shanti Poorvak Mil Kar Chalo' was his slogan. And it resembles the Vedic tune.

Nehru's patriotic feelings were fired by Rowlatt Act and Jaliyan-wala Bagh Tragedy and he plunged into the freedom Movement of India. 'Quit India Resolution' against Britishers was passed under his leadership.

Besides it he was a great writer. He wrote a famous book named 'Discovery of India'.

3. Indira Gandhi - His only daughter Mrs. Indira Gandhi was a brave International figure. On 19th of November her birthday falls. Actually she and her father Nehru were regarded as Architects of Modern India. Under their leadership India proved herself to be the country of the east as east gives light to the west. Mrs. Indira Gandhi always tuned with the ideology of Maharishi Dayanand who dreampt that India must be independent regarding the science, technology and Architecture.

4. Lala Lajpat Rai. - The day on 17th of November is regarded as 'Balidaan Divas'. He was a great patriot and a staunch arya Samaji and a disciple of Maharishi Dayanand.

He was a great orator who influenced the youths and highlighted their attitude towards patriotism. Due to his fearlessness he was called 'Punjab Kesari'. The Indian revolutionary youths were very happy to have his company and message. Sirdar Bhagat Singh, Raj Guru and Sukhdev were staunch lovers of his ideology.

Lala Lajpat Rai opposed the coming of Siman commission. He was arrested by the English Govt. Under the Lathi charge he was badly wounded. His fearless words, however, were of great enthusiasm- 'Every stroke of every staff on my body will certainly prove themselves as the aching nails thrust into the coffin of British empire'.

And this valiant son of Bharat Mata and the courageous follower of Swami Dayanand closed his eyes on 17th November at the age of 64. But his bold words will always be floating in the air to give direction to the young generation at present and in the future.

- B.R. Sharma Vibhakar

योग द्वारा ही वर्तमान समस्याओं का समाधान सम्भव है

– डॉ. रघुवीर वेदालंकार, नई दिल्ली

योग एक मानस शास्त्र है जिसमें मन को संयत करना और पाशविक वृत्तियों से हटना सिखाया जाता है। वर्तमान समस्याओं के सर्वांगीण विनाश के लिए योग बहुत उपयोगी है, मानव जीवन के लिए आवश्यक शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक तथा आत्मिक विकास में यह विद्या सफलता दिलाती है।

वर्तमान समय में योग का पर्याप्त प्रचार हो रहा है, किन्तु यह प्रचार केवल दो रूपों में दृष्टिगोचर हो रहा है। या तो ध्यान, जिसे आज के प्रगतिशील समाज में मेडिटेशन नाम दिया गया है, के नाम पर कुछ देर आंखें बन्द करके बैठ जाते हैं, या योगा के नाम पर विविध प्रकार के आसन करके सन्तुष्ट हो लिया जाता है कि हम योग कर रहे हैं। शहरी जीवन में आपको इन दोनों क्रियाओं को करने वाले ऐसे अनेक सज्जन मिल जायेंगे, जो गर्व से कहते मिलेंगे कि मैं योगा की क्लास में गया था, या प्रातःकाल नियिमित योगा (योगासन) करता हूँ। इसी प्रकार Meditation के द्वारा सन्तुष्ट हो जाने वाले अनेक जन भी अपने को योगाभ्यासी करने का भ्रम पाल लेते हैं।

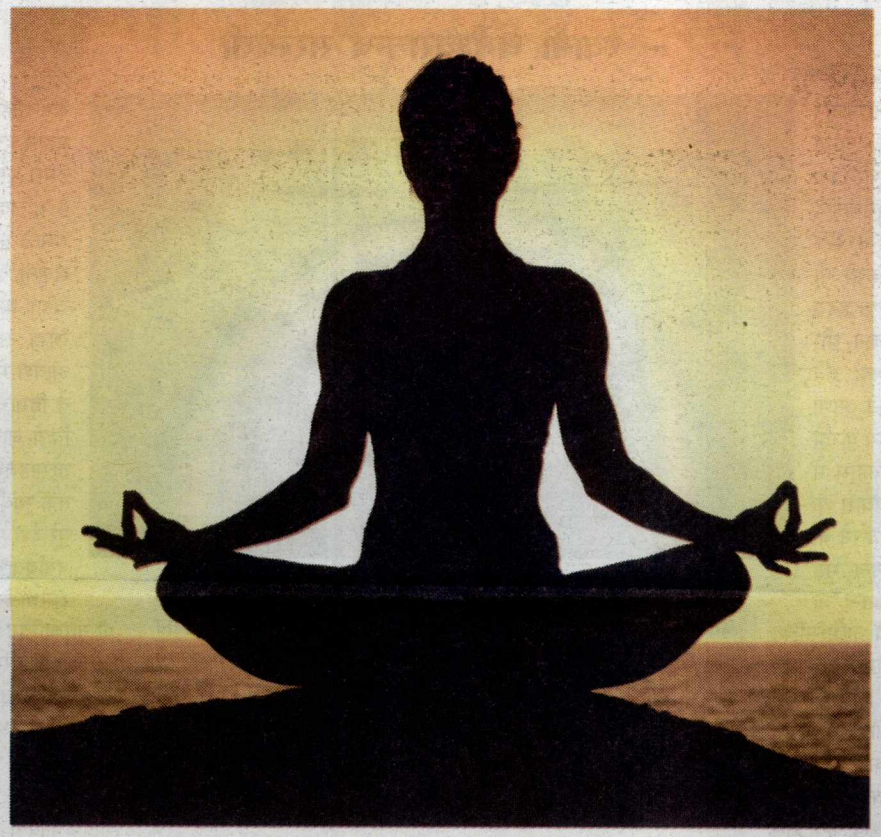

ये दोनों ही क्रियाएं योग नहीं हैं। यह भी कह सकते हैं कि पातंजल योग दर्शन से इनका सम्बन्ध नहीं है। जहां तक Meditation का प्रश्न है, वह स्वल्पांश में योग की धारणा का स्वरूप तो है, तथापि विशुद्ध रूप में धारणा भी नहीं है, अपितु विचारों का केन्द्रीकरण है। ऐसा केन्द्रीकरण तो गम्भीर कार्य करते हुए सभी को कराना पड़ता है। गाड़ी चलाते हुए ड्राइवर, आप्रेशन करते हुए डॉक्टर, शोध करते हुए वैज्ञानिक, अध्यापन करते हुए अध्यापक इत्यादि अनेक व्यक्ति पूर्ण दत्तचित्त होकर ही अपने कार्य को करते हैं। दो बांसो के बीच में बन्धी हुई लम्बी रस्सी पर चलने वाला नट, तीव्र गति से मौत के कुँए में मोटर साइकिल चलाने वाला व्यक्ति तो इनसे भी अधिक ध्यानमग्न होकर अपना कार्य करते हैं, तथापि उन्हें कोई योगी नहीं कहता, क्योंकि उनका ध्यान योग से सम्बन्धित नहीं, अपितु अपने कार्य से सम्बन्धित है। पतंजलि ने तो योगकी सुस्पष्ट परिभाषा दे दी है –

'योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः'। सभी प्रकार की चित्तवृत्तियों का निरोध ही योग हैं। यहाँ यह समझ लेना बहुत आवश्यक है कि पतंजलि का यह चित्तवृत्ति निरोध किसी समय विशेष के लिये नहीं है, अपितु 24 घण्टे जीने वाले जीवन के लिए है। इस पर बाद में विचार करेंगे, पहले आसनों के विषय में भी कुछ कहना अनिवार्य है। आजकल योग/योगा के नाम जिन आसनों की क्लासें लगायी जाती हैं, वह परम उपयोगी हैं। लेख का उनसे कोई विरोध नहीं, किन्तु आसन शारीरिक स्वास्थ्य तथा रोगमुक्ति तक ही सीमित हैं। यह भी बहुत बड़ी उपलब्धि है। वर्तमान समय में अनियन्त्रित भोग-विलास में लिप्त होने वाले, अनाप-शनाप खाने वाले जन नाना रोगों से ग्रस्त रहते ही हैं। ये रोग ऐसे दुःसाध्य भी होते हैं, जिन्हें डॉक्टर/अस्पताल भी ठीक नहीं कर पाते। योगासनों के द्वारा ऐसे अनेक व्यक्ति रोगमुक्त होते देखे गये हैं। यह योगासनों की बहुत बड़ी उपलब्धि है, तथा यह जनसाधारण को अपनाना चाहिए। उसके लिए यही सब कुछ है। इसलिए वह इनसे आगे जाने का यत्न ही नहीं करता। न करे, किन्तु इन्हें योग मानने का भ्रम उसे नहीं पालना चाहिए। पतंजलि ने योगदर्शन में इस प्रकार के आसनों का विधान नहीं किया। उसके अनुसार तो आसन वही है, जिसमें सुखपूर्वक लम्बे समय तक धारणा, ध्यान में बैठा जा सके। क्या पतंजलि को अनेक प्रकार के आसनों का ज्ञान नहीं था। अवश्य होगा, किन्तु वे उन्हें ध्यान में सहायक या आवश्यक नहीं मान रहे हैं। इसलिए योगदर्शन में उनको स्थान नहीं दिया। रही बात रोग मुक्ति की। इसके लिए पतंजलि दूसरा उपाय सुझाते हैं – ईश्वरप्रणिधान। इनकी व्याख्या में व्यास जी लिखते हैं कि ईश्वर प्रणिधानी को व्याधि आदि दुःख नहीं सताते। इसके साथ ही पतंजलि द्वारा प्रतिपादित यम-नियम-प्राणायाम-प्रत्याहार का पालन करने वाला साधक या तो रोगी होगा ही नहीं, होगा भी तो बहुत कम। क्योंकि 'भोगे रोगभयम्' यह संसार भोगी है, तभी तो रोगों में ग्रस्त है। योगी रोगी में ग्रस्त होगा ही नहीं। इसीलिए पतंजलि को विस्तार से योगासनों के उल्लेख की आवश्यकता नहीं पड़ी।

योग इतना सस्ता नहीं है जितना कि उसे आज बना दिया गया है। पतंजलि का योग एक समग्र जीवन पद्धति है। वह किसी एक भाग की साधना का नाम नहीं, अपितु योग के आठों अंगों की समग्र साधना का नाम है। इसलिए वह केवल किसी काल विशेष या स्थान विशेष में की जाने वाली क्रियाएं नहीं हैं, अपितु चौबीसों घण्टे जीवन से सम्बन्धित एक सुव्यवस्थित पद्धति है कि जिससे मानव जीवन पूर्णतः नियन्त्रित एवं परिमार्जित हो जाता है। योग के द्वारा न केवल व्यक्ति का, अपितु पूरे समाज एवं राष्ट्र का जीवन परिमार्जित हो सकता है, शुद्ध हो सकता है।

योग इतना सस्ता नहीं है जितना कि उसे आज बना दिया गया है। पतंजलि का योग एक समग्र जीवन पद्धति है। वह किसी एक भाग की साधना का नाम नहीं, अपितु योग के आठों अंगों की समग्र साधना का नाम है। इसलिए वह केवल किसी काल विशेष या स्थान विशेष में की जाने वाली क्रियाएं नहीं हैं, अपितु चौबीसों घण्टे जीवन से सम्बन्धित एक सुव्यवस्थित पद्धति है कि जिससे मानव जीवन पूर्णतः नियन्त्रित एवं परिमार्जित हो जाता है।

योग के द्वारा न केवल व्यक्ति का, अपितु पूरे समाज एवं राष्ट्र का जीवन परिमार्जित हो सकता है, शुद्ध हो सकता है। योग से वर्तमान समस्याओं का समाधान कैसे सम्भव है, इस पर भी विचार करते हैं :-

योग का प्रारम्भ आसनों अथवा ध्यान से नहीं होता, अपितु यम-नियमों से होता है। लेखक की सुदृढ़ मान्यता है कि यम-नियमों के पालन बिना योग में प्रवेश हो ही नहीं सकता। पातंजलि द्वारा विहित यम-नियमों के प्रयोजनों को संक्षेप में इस प्रकार कहा जा सकता है?

(क) दुष्कर्मों के निवारणार्थ – अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य इन चारों का यही प्रयोजन है।

(ख) सांसारिक पदार्थों से विरक्ति – अपरिग्रह का फल।

(ग) चित के मलों का क्षालन – आन्तरिक शौच तथा तप द्वारा।

(घ) एकाग्रता एवं समाधि में सहायता – आन्तरिक शौच तथा स्वाध्याय से चित की एकाग्रता प्राप्त होती है। इससे ही इन्द्रियों पर जय प्राप्त होती है, जो कि योगी के लिए परम आवश्यक है। इन्द्रियलोलुप व्यक्ति योग कर ही नहीं सकता।

(ङ) ईश्वर प्रणिधान समाधि की सिद्धि में साक्षात् कारण बनता है। इस प्रकार सभी यम-नियम योगाभ्यासी के लिए आवश्यक है।

प्रश्न है, योग से वर्तमान समस्याओं का समाधान कैसे होगा? होगा, आज का मानव शीघ्रता से भोगवाद की ओर न केवल भाग रहा है, अपितु उसमें आकण्ठ धंसा हुआ है। आज का अध्यात्म भी भोगवाद में लिप्त है उससे अछूता नहीं हैं। उनके पास वे सभी साधन सभी सुख-सुविधाएँ विद्यमान हैं, जो सभी सांसारिक व्यक्तियों को उपलब्ध भी नहीं हैं। धन एवं यश की तृष्णा उनके मन में गहराई तक छायी रहती है। जब सन्तों, महन्तों की यह दशा है तो सामान्य सांसारिक जनों की क्या स्थिति होगी? योगदर्शन इसी तृष्णा पर कुठाराघात करता है। वह उसे पूर्णतः नष्ट करता है। इसलिए पतंजलि ने 'संतोष' नामक नियम बताया तथा इसका फल भी बतला दिया – **सन्तोषादनुत्तमं सुखलाभः।** अर्थात् सन्तोष से ही अलौकिक सुख मिलता है तृष्णाक्षय के सम्बन्ध में व्यास जी ने एक श्लोक उपस्थित किया है –

यच्च कामसुखं लोके यच्च दियं महत्सुखम्।
तृष्णाक्षयसुखस्यैते नार्हतः षोडशीं कलाम्॥

अर्थात् संसार के दिव्य सुख भी तृष्णाक्षय रूपी सुख के 1/16 भाग के बराबर भी नहीं है। यदि समाज इस श्लोक को हृदयंगम करता है, तो उसके बहुत से कष्ट मिट जायेंगे। तृष्णा के वशीभूत होकर ही हम वस्तुओं का अनाप-शनाप अनावश्यक संग्रह किये जाते हैं। चेन्नई की मुख्यमंत्री जयललिता का उदाहरण सुप्रसिद्ध है कि उसके पास इतनी साड़ियाँ निकली कि वर्ष में प्रत्येक को एक बार भी धारण करने का अवसर नहीं आता। अन्य सम्पत्ति का विवरण तो अलग है, जो सर्वविदित है। अकेली जयललिता ही नहीं, राजनीतिक के लोग इसी धर्म का निर्वाह कर रहे हैं। राजनीति में तो दोनों हाथों से सम्पत्ति बटोरने की पूरी छूट है ही। आज सामान्य जनता भी इसी दौड़ में शामिल हो रही है। परिणाम क्या है? दुःख, छीनाझपटी, बेईमानी, रिश्वत इत्यादि। यदि इन लोगों ने पतंजलि के निमय 'अपरिग्रह' का पाठ पढ़ा होता तो यह दुर्दशा न होती।

आज सर्वत्र आतंकवाद, हत्याएं, मारकाट का साम्राज्य है। इसमें अन्य कारणों के सिवाय एक कारण यह भी है कि अंडे तथा माँस भक्षण के द्वारा हिंसावृत्ति हमारे रूधिर में प्रवेश कर गयी है। अपने सुख के लिए प्राणी के प्राण लेने में आज का मानव संकोच नहीं करता। इस वृत्ति पर पतंजलि के 'अहिंसा' नामक यम द्वारा ही नियन्त्रण लगाया जा सकता है। दण्ड के भय या अन्य कारण से हिंसावृत्ति दूर होने वाली नहीं। भारत आज अपनी जनसंख्या वृद्धि से भयभीत है। इसलिए परिवार नियोजन पर पता नहीं, राष्ट्र का कितना धन बर्बाद किया जा रहा है। परिवार वृद्धि के मूल में जो काम वासना है, उस पर नियन्त्रण लगाने का कोई यत्न नहीं किया जा रहा, उल्टे, विषय भोग को बढ़ावा देने वाले नाना साधन सरकार तथा डॉक्टरों की ओर से सुझाए जा रहे हैं। यदि पतंजलि के 'ब्रह्मचर्य' नामक यम का इतनी तत्परता से प्रचार-प्रसार किया गया होता तो तब राष्ट्र तथा राष्ट्रवासियों का चरित्र कुछ और ही होता। तब अपहरण नहीं होते। तब बलात्कार नहीं होते। ब्रह्मचर्य ही सबको नियन्त्रित कर देता। ऐसा करे कौन? वेद में कहा है – **ब्रह्मचर्येण तपसा राजा राष्ट्र विरक्षति।** अर्थात् ब्रह्मचर्य तथा तप के द्वारा ही राजा राष्ट्र की रक्षा करता है। आज तो बिल क्लिंटन जैसे राष्ट्रपति भी विद्यमान हैं, जिनकी दुश्चरित्रता समस्त संसार में सुप्रसिद्ध होने पर भी उनके गौरव में कमी नहीं आई। भारत में भी यह विचार तीव्रता से घर करता जा रहा है कि चरित्र का राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं। पतंजलि ब्रह्मचर्य के द्वारा समाज के दुराचारी व्यक्तियों को ही नियंत्रित कर रहे हैं। योगी तो ब्रह्मचारी होता ही है। इतना ही नहीं, व्यास जी तो यह भी लिखते हैं कि उपस्थेन्द्रिय के समान अन्य लोलुप इन्द्रियों को भी विषयों से रोकने का नाम ब्रह्मचर्य है। यदि ब्रह्मचर्य की इस परिधि को अपना लिया जाये तो व्यक्ति का जीवन पूर्णतः नियन्त्रित हो जाए।

पतंजलि ने अस्तेय तथा सत्य का भी विधान किया है। आज समाज ने दोनों को ही परे फेंक दिया। अस्तेय की परिधि विशाल है। किसी के द्रव्य को उसकी अनुमति के बिना लेना स्तेय है। अपनी ड्यूटी का पूरे समय ठीक से पालन न करना स्तेय है। पदार्थों में मिलावट कराना स्तेय है। मासिक वेतन के अतिरिक्त दो नम्बर की कमाई करना स्तेय है। झूठे बिल बनाना स्तेय है। यह जानते हुए भी पूरा समाज इस स्तेय (चोरी) में लिप्त है। इसके लिए असत्य का आश्रय लेता है। यदि पतंजलि के अस्तेय तथा सत्य का पाठ समाज एवं राष्ट्र ने पढ़ लिया होता तो उसका नैतिक चरित्र पतन की ओर न जाकर उन्नति के शिखर पर पहुँच जाता।

यहाँ संक्षेप में यही प्रतिपादन किया गया है कि Meditation के नाम पर आँख मीचकर बैठ जाने का तथा योगासन मात्र कर लेने का नाम योग नहीं है, अपितु यह तो समग्र जीवन दर्शन है तथा क्रियात्मक रूप में जीवन को शुद्धता की ओर ले जाकर दुःखरहित करने की वैज्ञानिक पद्धति है। पतंजलि के अनुसार योगाभ्यासी व्यक्ति ईश्वर विश्वासी होगा। वह सन्तोषी, तपस्वी, अहिंसक, सत्यवादी, स्वाध्यायशील तथा ब्रह्मचारी होगा। वह इन्द्रियलोलुप नहीं होगा। जब ऐसे व्यक्ति होंगे तो समाज सुधरेगा या नहीं? वर्तमान समस्याएं समाप्त होंगी या नहीं? इसलिए योग को हमें क्रियात्मक रूप में जीवन में अपना लेना चाहिए। तभी समाज का परिशोधन होगा। तभी वर्तमान समस्याओं का समाधान होगा। भोगवादी तथा स्वेच्छाचारी व्यक्ति का योग में प्रवेश नहीं है।

तीन दिवसीय कन्या चरित्र निर्माण व योग शिविर के उद्घाटन अवसर पर फरमाणा में स्वतंत्रता दिवस पर लिया गया ऐतिहासिक फैसला

हर लड़की का जन्मदिन आर्य समाज अपनी ओर से आर्य समाज मंदिर फरमाणा में मनायेगा

जागरूकता से ही रुकेंगी बुराइयाँ– प्रवेश आर्या

बेटी बचेगी तो ही सृष्टि बचेगी– पूनम आर्या

रोहतक : सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, बेटी बचाओ अभियान व आर्य समाज फरमाणा के संयुक्त तत्वावधान में आज स्वतंत्रता दिवस पर तीन दिवसीय कन्या चरित्र निर्माण व योग शिविर का उद्घाटन गावँ के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में किया गया।

सर्वप्रथम आर्य समाज मंदिर फरमाणा में अमर शहीदों को श्रद्धांजलि यज्ञ में आहुति डालकर दी गई। यज्ञ में ब्रह्मा की भूमिका बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय प्रधान बहन पूनम आर्या ने निभाई। जबकि यजमान युवा समाजसेवी सौरभ फरमाणा रहे।

यज्ञ के बाद बेटी बचाओ अभियान की संयोजक बहन प्रवेश आर्या की अध्यक्षता में सौरभ फरमाणा ने बहन पूनम आर्या व आर्य समाज के अधिकारियों की उपस्थिति में रा.व.मा. विद्यालय में राष्ट्रीय ध्वज फहराकर शिविर का विधिवत शुभारम्भ किया

अपने मुख्य उद्बोधन में सौरभ ने कहा कि इस तरह का यह लड़कियों के लिए शिविर हमारे गावँ में पहली बार आयोजित किया जा रहा है। यह ऐतिहासिक शिविर रहेगा। इस शिविर के माध्यम से बहनों में आत्म सम्मान की भावना पैदा होगी जो कि अत्यंत आवश्यक है। इस शिविर की सफलता के लिये उन्होंने हर सम्भव मदद का भरोसा भी दिया।

बहन पूनम आर्या ने कहा कि आज हम आजादी का जीवन जी रहे हैं। जिसको पाने के लिए एक लंबा संघर्ष हमारे पूर्वजों ने किया है। अपना सब कुछ इस देश के लिए न्योछावर कर दिया, परन्तु आज भी ये विडम्बना है कि 69 वर्ष की आजादी के बाद भी महिलाएं पूर्ण रूप से आजाद नहीं दिखाई देती उनको या तो माँ के पेट में मार दिया जाता है या दहेज के लालच में जला कर या फिर सड़कों पर बलात्कार करके मरने के लिए मजबूर किया जाता है। आज यदि हम शहीदों को सच्ची श्रद्धांजलि देना चाहते हैं तो एक संघर्ष और करना पड़ेगा ओर वो संघर्ष होगा बहनों को इस दहशत व खौफ के माहौल से आजादी दिलाने का। जिस दिन बहनें घर से बहार जाने में कोई डर महसूस नहीं करेंगी उस दिन सही मायने में हम शहीदों को सच्ची श्रद्धांजलि दे पाएंगे।

बहन प्रवेश आर्या ने कहा कि स्वतंत्र का अर्थ होता है स्वयं पर शासन करना। आज यदि हम अपने स्वयं पर शासन करना सीख जायेंगे तो किसी भी प्रकार की सामाजिक बुराई समाज में टिक नहीं पायेगी। प्रवेश आर्या ने बताया कि आर्य समाज फरमाणा गावँ की सभी लड़कियों का जन्मदिन आर्य समाज मंदिर में मनायेगा तथा यज्ञ करके उनको शुभकामनाएँ दी जाएँगी। इसकी शुरुवात आज से ही कर भी दी गई।

गावं की चार लड़कियों का जन्मदिन आज आर्य समाज में मनाया गया व उन्हें स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित भी किया गया। जिनमें नेहा कुमारी, ज्योति आर्या, प्रीति व संजू कुमारी शामिल रहीं।

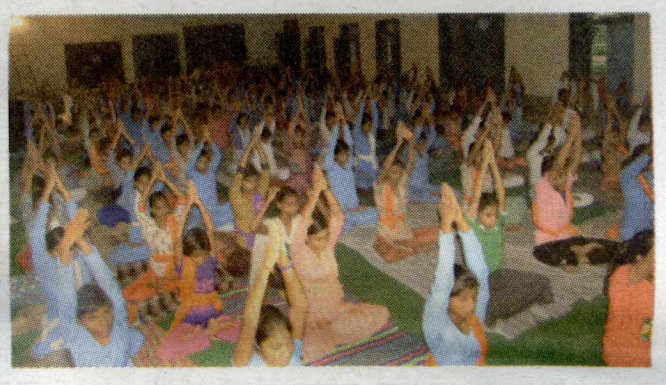

शिविर की मुख्य व्यायाम आचार्या राष्ट्रपति से सम्मानित बहन सोनिया ने बताया कि इस शिविर में 200 बहनें भाग ले रही हैं जिन्हें योगासन, बॉक्सिंग, जुडो कराटे व लाठी चलाना भी सिखाया जायेगा। ताकि स्वयं सुरक्षा की भावना उनमें पैदा की जा सके। योगा में गोल्ड मेडल विजेता राजकुमारी आर्या व कृति आर्या भी प्रशिक्षण दे रही हैं।

इस अवसर पर मा. सेवाराम आर्य, नफेसिंह आर्य, रणधीर सिंह, मनोज पहलवान, डॉ. राजेश आर्य, राजेन्द्र शर्मा, रणधीर बूरा, मेजर बीर सिंह, नरेंद्र शहारन, देवेन्द्र ,रामनिवास, मनीष, मोनिका, राजबीर आर्य आदि ने भी अपने विचार रखे।

योग शिविर के दूसरे दिन का कार्यक्रम निम्न प्रकार रहा :–

कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी व अश्लीलता आदि बुराईयाँ केवल जागरूकता से ही रोकी जा सकती हैं। ये शब्द बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या ने आज गावँ फरमाना के राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में आयोजित कन्या चरित्र निर्माण व योग प्रशिक्षण शिविर के द्वितीय दिवस के दौरान आयोजित जन चेतना यात्रा के बाद कहे।बहन जी ने कहा कि बुराईयों को सिर्फ जागरूकता से ही रोक जा सकता है। इसलिए आज ज्यादा से ज्यादा जागरूकता फलाने के लिए कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए।

आज सुबह गावँ की चौपाल में बहन पूनम आर्या ने यज्ञ में आहुति डलवाकर संकल्प दिलवाया जिसमें आज छात्राओं व ग्रामीणों ने आहुति डाली व बुराइयों से दूर रहने का संकल्प लिया। बहन जी ने कहा की आज बेटियों को माँ के पेट में मरने से बचाना होगा क्योंकि लोग आज बेटी को ही नहीं बल्कि भविष्य की माँ का भी कत्ल कर रहे हैं। बेटियाँ बचेंगी तभी सृष्टि बचेगी क्योंकि नारी के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। केवल बेटों की चाहत रखने वालों का वंश चलाने वाला तो आ जायेगा परन्तु उस वंश को आगे बढ़ाएगा कौन? जिस दिन ये सब बातें लोगों को समझ में आ जाएँगी उसी दिन से बेटियों के प्रति दूषित व घृणित मानसिकता रखने वाले लोगों का हृदय परिवर्तित हो जायेगा व बेटियों के प्रति सबका नजरिया बदल जायेगा।

आज सुबह यज्ञ के उपरांत शिविर में शामिल सभी लड़कियों ने बहन पूनम व प्रवेश आर्या के नेतृत्व में पूरे गावँ में जन चेतना यात्रा निकाली गई। ओ३म् के झंडो को हवा में फहराकर सभी ने गगन भेदी नारों से पूरे गावँ को गुंजायमान कर दिया। अमर शहीदों की जय, देश, धर्म पर बलिदान होने वालों की जय, भारत माता की जय, बेटी बचाओ –देश बचाओ, बेटी बचेगी–देश बचेगा, कन्या भ्रूण हत्या बंद करो, शराब पीना बंद करो आदि नारों को बोलते हुए सभी का जोश देखते ही बनता था।

शिविर की मुख्य व्यायाम शिक्षिका आचार्या सोनिया आर्या ने बताया की आज लड़कियों को जुडो कराटे के साथ–साथ योगासन, सर्वांगसुंदर व्यायाम व स्वयं सुरक्षा (सेल्फ डिफेन्स) की बारीकियाँ भी सिखाई गई। इसके अतिरिक्त प्राचीन खेल भी सिखाये गए। दोपहर के बौद्धिक में आज मंच पर बोलने का प्रशिक्षण भी दिया गया। राजकुमारी आर्या व कृति आर्या ने स्तूप निर्माण का प्रशिक्षण भी दिया।

गौसंवर्द्धन
गौ मानव जीवन का आधार है
जो घर में गाय पालते हैं, सभी दुःख दूर हो जाते हैं

– स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती

मानव एक कर्मशील प्राणी है। अकर्मण्य होकर मानव अधिक दिन जीवित नहीं रह सकता। वेद में कहा भी है :-

कुर्वन्नेवेह कर्माणि जीजीविशेतꣳसमा॥ यजु. 40/2॥

अर्थात् कर्म करते हुए ही सौ वर्ष जीने की कल्पना कर।

परन्तु कर्म करने हेतु शरीर का स्वस्थ और निरोगी होना आवश्यक है। स्वस्थ रहने के लिए भोजन आवश्यक है और निरोगी होने के लिए भोजन में औषधीय तत्व होना आवश्यक है। गाय का दूध पूर्ण भोजन भी है और उसमें रोग नाशक औषधीय तत्व भी प्रचुर मात्रा में विद्यमान रहते हैं।

गौ का कच्चा दूध बच्चे व बड़ों के लिए चमत्कारी दवा है, ऐसा डॉ. विमलारानी का कथन है। उन्होंने एक पत्रिका में लिखा है कि –

(1) अत्यन्त दुबले पतले शरीर वाले (जरजर शरीर) को 6 माह तक 500 ग्राम गाय का कच्चा दूध पिलाने से स्वस्थ और शक्तिशाली शरीर हो जाता है।

(2) गाय के कच्चे दूध की मालिश करने से त्वचा कोमल, स्निग्ध और गोरी चमकदार बनती है।

(3) गाय का कच्चा दूध आंखों में डालने से सभी नेत्र विकार दूर होते हैं।

(4) गाय का 500 ग्राम दूध प्रतिदिन पीने से असाध्य रोग कैंसर-लकवा, मधुमेह, रक्तचाप दूर होते हैं।

(5) सिर चकराना, मानसिक तनाव, दिल का बैठना आदि रोगों में गाय का कच्चा दूध बिना उबाले, बिना शक्कर डाले तथा काली तुलसी के पत्ते चबाने से असाध्य रोग 4 माह में दूर हो जाते हैं।

(6) रक्त विकारों में, हार्मोन्स की कमी, रक्त की कमी में गाय का कच्चा दूध लगातार 3-4 माह पीवें।

(7) जिन स्त्रियों को विवाह के बाद गर्भ न रहे या अन्य कोई बच्चेदानी का रोग हो, अण्डाशय, मासिक धर्म की अनियमितता हो तो गाय का कच्चा दूध 500 ग्राम प्रतिदिन शुद्ध शहद डालकर 5-6 माह पीना चाहिए।

(8) दुर्बल बच्चे को श्यामा गाय का कच्चा दूध विशेष गुणकारी है।

(9) बच्चों का कद बढ़ाने में गाय का कच्चा दूध रामबाण है।

(10) पुरुषों के प्रजनन अंगों के रोगों में गाय का कच्चा दूध परम हितकारी है।

अतः गाय का कच्चा दूध अनेक रोगों की औषधि है। ''वैदिक कोष निघण्टु'' में गौ शब्द के 11 अर्थ हैं – गाय, भूमि, अन्न, जल, दिशा, दृष्टि, किरण, स्वर्ग (सुख विशेष), वज्र, वाणी और तीर।

सर्वप्रथम गाय अन्य दशों अर्थों का आधार है क्योंकि गाय के गोबर व मूत्र से भूमि उपजाऊ होती है और अन्न शुद्ध पैदा होते हैं। जल भी गाय मूत्र व गोबर से शुद्ध हो जाता है, हानिकारक कीटाणु मर जाते हैं। गाय जिस दिशा में चलती है उसकी सांस से वायु शुद्ध हो जाती है। गाय के कच्चे दूध से दृष्टि रोग समाप्त हो जाते हैं। सूर्य की किरणों से गाय के शरीर में स्वर्ण बनता है जो दूध में धुलकर वीर्य का शोधन करता है। गाय सुखकारी है। गाय का दूध पीने से शरीर पुष्ट होता है, वाणी में मधुरता आती है। गाय का कच्चा दूध पीने से दृष्टि शुद्ध होकर तीर चलाने में निशाना सही लगता है।

अतः गाय मानव जीवन का आधार है। वेद में कहा है :-

इहव गांव एतने हो राकेव पुष्यत।
इहैवोत प्रजायध्वं मयि संज्ञानमस्तु वः॥ अ. 3-14-4॥

पदार्थ - (गावः) हे गौओ! (इह+एव) यहाँ ही (एतन) आओ (इह+उ) यहां ही (राका+इव) समर्था (ग्रहपत्नी) के समान (पुष्यत) पोषण करो। (उत) और (इह+एव) यहां ही (प्रजायध्वम्) बच्चों से बढ़ो अर्थात् सन्तान पैदा करो। (मयि) मुझमें (वः) तुम्हारा (संज्ञानम्) प्रेम (अस्तु) होवे।

भावार्थ - जैसे समर्थ ग्रहपत्नी घर वालों का पोषण करके प्रसन्न रखती है, ऐसे ही गौवें अपने दूध, घी, छाछ व दही से अपने रक्षकों को पुष्ट और स्वस्थ रखती हैं। इससे सब मनुष्य प्रीतिपूर्वक गाय का पालन करें और उनका वंश बढ़ावें।

''शब्द कल्पद्रुम कोष'' में कहा है :-

गोमूत्रं गोमयं क्षीरं सर्पिः दधि च रोचना।
षड्ङ्गमेतन्मङ्गल्यं पवित्रं सर्वदा गवाम्॥

अर्थ - गोमूत्र, गोबर, दूध, घी, दही और गो रोचना (गौशाला की मिट्टी), गौओं के ये छः गव्य सर्वदा मंगलकारी शुद्ध पदार्थ हैं। अतः जिस घर में गाय पाली जाती हैं, सभी दुःखों को दूर भगाती है।

गोमूत्र से फसल सुरक्षा - रामपुर के शफी अहमद का कहना है कि गोमूत्र की उपयोगिता फसलों की सुरक्षा में अत्यधिक प्रभावशाली है। नीलगाय समेत कई जंगली जानवर अक्सर खेतों में लहलहाती फसल को उजाड़ देते हैं। इसके अलावा फसलों में रासायनिक खाद और कीटनाशक दवाओंके प्रयोगों से जमीन की उपजाऊ क्षमता भी प्रभावित होती है। इनका असर मनुष्यों और

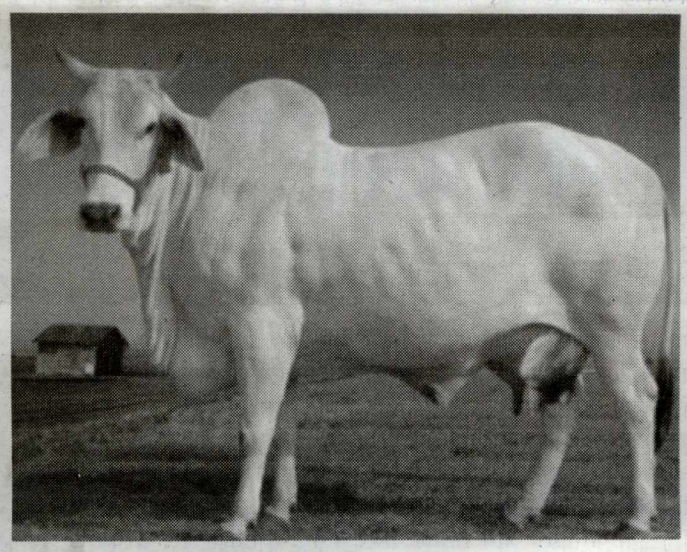

पशुओं के शरीर तक भी पहुँचता है।

फसलों की सुरक्षा के लिए गौमूत्र का मिश्रण अत्यन्त प्रभावकारी है। नीचे लिखी विधि अनुसार गोमूत्र मिश्रण तैयार किया जा सकता है।

घटक	मात्रा
गौमूत्र	20 लीटर
नीम की पत्ती	5 किलो
धतूरा	2 किलो
तम्बाकू की पत्ती	500 ग्राम
लहसुन	250 ग्राम

इन घटकों को एक बड़े वर्तन में घोलकर बन्द करके (वायुरोधी) 40 दिन तक धूप में रखें फिर छान लें। 80 लीटर पानी में 1 लीटर घोल डालक फसल पर छिड़काव करे।

नीलगाय और अन्य जंगली जानकर इसकी गन्ध के कारण फसल को मुँह नहीं लगा सकते।

इसके अतिरिक्त तुलसी, मेंथा, पिपरेटा आदि का बाड़ा खेत के चारों ओर लगाकर भी फसल की सुरक्षा की जा सकती है।

वेद में पशुवध निषेध :- यजुर्वेद के अध्याय 13 के मंत्र 49 में तथा अथर्ववेद काण्ड 18 सूक्त 4 मंत्र 30 में कहा है कि - हे राजपुरुषों! तुम लोगों को चाहिए कि जिन बैल आदि पशुओं के प्रभाव से खेती आदि काम, जिन गौ आदि से दूध, घी आदि उत्तम पदार्थ प्राप्त होते हैं और जिनके दूध आदि से प्रजा की रक्षा होती है, उनको कभी मत मारो और जो इन उपकारक पशुओं को मारे उनको राजा, न्यायाधीश आदि कठोर दण्ड देवें। फिर मन्त्र 52 में कहा है :-

त्वं यविष्ट दाशुषो नॄंः पाहि शृणुधी गिरः।
रक्षा तोकमतत्मना॥

अर्थात् जो मनुष्य, मनुष्यादि प्राणियों के रक्षक पशुओं (गाय, भैंस, बकरी, ऊँटनी, घोड़ी, गधी, भेंड आदि) को बढ़ाते हैं और कृपामय उपदेशों को सुनते सुनाते हैं वे अत्यन्त सुख को प्राप्त होते हैं।

इन मन्त्रों में उन मनुष्यों की रक्षा करने का आदेश है जो सुखदाता पशुओं और उनके बच्चों की रक्षा करते हैं। याद रखो जो कष्ट तुम्हारी आत्मा तुम्हें मारने में अनुभव करती है वैसे ही पशुओं की आत्मा कष्ट अनुभव करती है अतः लाभकारी पशुओं की हर सम्भव रक्षा करनी चाहिए।

मनुस्मृति में भी कहा है कि :-

अनुमन्ता विशसिता निहन्ता क्रय-विक्रयी।
संस्कर्त्ता च उपहर्त्ता च खादकः च इति घातकः॥ मनु. 5-51॥

अर्थ - (अनुमन्ता) मारने की अनुमति देने वाला, (विशसिता) मांस के काटने वाला (निहन्ता) पशु, पक्षी को मारने वाला, (क्रय) खरीदने वाला, (विक्रयी) बेचने वाला (संस्कर्त्ता) पकाने वाला (उपहर्त्ता) परोसने वाला और (खादकः) खाने वाला, ये आठ मनुष्य घातक हिंसक अर्थात् ये सब पाप करने वाले हैं।

अतः जिस राज्य में पशुवध होता है उस राज्य का राजा भी पाप का भागी है क्योंकि उसकी अनुमति से ही पशुहिंसा होती है अर्थात् पशुहिंसा में उनका स्वार्थ है क्योंकि ''स्वार्थी दोषं न पश्यति'' जो स्वार्थ साधने में तत्पर है वह अपने दोषों पर ध्यान नहीं देता।

महर्षि दयानन्द रचित गौकरुणानिधि में लिखा है कि-

सत्पुरुषों का सिद्धान्त है कि ''विषादप्यमृतङ्ग्राह्यम्'' अर्थात् विषात् अपि अमृतं ग्राह्यम्'' विष से भी अमृत ग्रहण करना चाहिए।

इसी प्रकार गाय आदि का मांस विषवत् महारोग कारी को त्यागकर, उनसे उत्पन्न हुए दूध, घी आदि अमृत रोग नाशक हैं उनको ग्रहण करना चाहिए।

वर्तमान में पशुओं के चारागाह समाप्त कर दिये गये हैं। जो उसी तरह का पाप कर्म है जैसे किसी भूखे मनुष्य के सामने से भोज्य पदार्थ उठा लिये जावें और उसे भगा दिया जाये, तो क्या वह भूखा सुख मानेगा? जंगल में आग लगा जावे तो कुछ चिन्ता नहीं, किन्तु पशु न खाने पावे।

ध्यान देकर सुनिये कि जैसा दुःख-सुख अपने को होता है, वैसा ही औरों के प्रति भी सोचना चाहिए और भी ध्यान में रखिये कि वे पशु आदि और उनके स्वामी तथा खेती आदि कर्म करने वाले प्रजा के पशु आदि और मनुष्यों के अधिक पुरुषार्थ ही से राजा का ऐश्वर्य अधिक बढ़ता और न्यून से नष्ट हो जाता है, इसीलिए राजा, प्रजा से कर लेता है कि उनकी रक्षा यथावत करें न कि राजा और प्रजा के जो सुख के कारण गाय आदि पशु हैं उनका नाश किया जावे।

इसलिए आज तक जो हुआ सो हुआ, आगे, आँखें खोलकर सबसे हानिकारक कर्म (पशुहिंसा) को न कीजिए और न करने दीजिए।

अतः सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली की गौ-सम्बर्द्धन समिति भारत सरकार से यह मांग करती है कि –

(1) सम्पूर्ण भारतवर्ष में गो हत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध लागू किया जावे।

(2) प्रत्येक गांव के चारों ओर पशु चारागाह हेतु भूमि सुरक्षित की जावे।

(3) गौ संवर्द्धन संरक्षण अधिनियम बनाया जावे जिसमें गौ हिंसक को कठोर दण्ड का प्रावधान हो।

(4) गौ पालकों को आर्थिक सहायता की जावे।

(5) प्रत्येक प्रान्त में गौ-संवर्द्धन व शोध संस्थान स्थापित किये जावे।

(6) होटलों, रेस्तराओं में मांसाहार पर पूर्ण प्रतिबन्ध होना चाहिए।

(7) विदेशी महमानों को गौमांस न परोसा जावे।

(8) शिक्षा पुस्तकों में, पशु, पक्षियों की मानव जीवन में उपयोगिता पर अध्याय जोड़े जाएं।

(9) कृषि क्षेत्र में बैल, भैंस, ऊँट आदि के उपयोग को बढ़ावा दिया जाये।

(10) गौशालाओं का नियमित निरीक्षण सुनिश्चित किया जावे।

गौ संवर्द्धन समिति यह अनुभव करती है कि सरकार मांस भक्षक अल्प संख्यकों के हितार्थ भारतीय संस्कृति व वेद आज्ञा के विपरीत कार्य कर रही है जो भारतीय मूल निवासियों अधि संख्यकों का अपमान ही नहीं उनकी सात्विक संस्कृति को नष्ट करना है।

- संयोजक, गौसंवर्द्धन समिति, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2

सन्त शिरोमणि शांति, सरलता, सौम्यता की प्रतिमूर्ति स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती महाराज की स्मृति में सभा

आर्य समाज, गुरुकुल पूठ, गढ़मुक्तेश्वर, जिला-हापुड़ (उ. प्र.) में स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी के निधन की सूचना से पूरे आर्य परिवारों में शोक की लहर दौड़ गई। आर्य समाज के मंत्री आचार्य दिनेश कुमार जी ने सभी सदस्यों को एकत्रित कर वृहद शांति यज्ञ का आयोजन किया गया यज्ञ के पश्चात् स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती जी की अध्यक्षता में शोक सभा हुई जिसमें वक्ताओं ने विचार व्यक्त कर दिवंगत आत्मा की शांति हेतु प्रार्थना की पूज्य स्वामी जी ने अपने जीवन के संस्मरण सुनाये इस युग का स्वामी जी को ब्रह्मर्षि बताया। उन्होंने बताया कि हमारे पूर्वज जो परम्पराएँ स्थापित कर गए हैं उसे पूरा करने के लिए स्वामी जी ने अपने जीवन की आहुति लगाई। सभी सदस्यों ने 2 मिनट के साथ मौन रहकर आत्मा की अमरता के लिए प्रार्थना की।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद दुःखभाग भवेत्।।

- राजीव आचार्य

दयानन्द मठ चम्बा के अध्यक्ष पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती महाराज को विनम्र श्रद्धांजलि

गुरुकुल महाविद्यालय पूठ (पुष्पावती) गढ़मुक्तेश्वर जिला-हापुड़ (उ. प्र.) में स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती के निधन की सूचना से पूरे कुल परिवार में शोक की लहर दौड़ गई। गुरुकुल के प्राचार्य आचार्य राजीव जी ने तुरन्त सभी कुलवासियों को एकत्रित कियाऔर पवित्र यज्ञशाला में वृहद शांति यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ के पश्चात् संचालक स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में शोक सभा का आयोजन हुआ जिसमें वक्ताओं ने विचार व्यक्त कर दिवंगत आत्मा की शांति हेतु प्रार्थना की पूज्य स्वामी जी ने अपने जीवन के संस्मरण सुनाते हुए उन्हें इस युग का ब्रह्मर्षि बताया, वे राग, द्वेष, क्रोध आदि दुर्गुणों से दूर रहकर विश्वानि देव ..... के अर्थ को सार्थक कर रहे थे। उन्होंने बताया कि हमारे पूर्वज जो परम्पराएं स्थापित कर गए हैं उसे पूरा करने के लिए स्वामी जी ने अपने जीवन की आहुति लगाई। वे गुरुकुल पूठ से बहुत आत्मीय स्नेह रखते थे उनकी वाणी की मधुरता, विद्वता, शालीनता, सौम्यता जीवन की सात्विकता विशिष्ट पहचान थी वे सदैव अर्य समाज के इतिहास में सम्मानं के साथ स्मरण कियेजायेंगे। कुल परिवार ने 2 मिनट के साथ मौन रहकर आत्मा की अमरता के लिए प्रार्थना की।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद दुःखभाग भवेत्।।

- समस्त आर्यबन्धु

स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती को दी गई विनम्र श्रद्धांजलि

आर्य वीरदल पश्चिम उत्तर प्रदेश की कार्यकारिणी की बैठक मेरठ आर्य समाज शास्त्रीनगर में महेश योगी जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई जिसमें स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती पूर्व प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के देहावसान पर शोक व्यक्त किया गया। सभी सदस्यों ने 2 मिनट मोन रहकर अपनी श्रद्धांजली प्रदान की। अधिकारियों में मुख्य रूप से स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी सभामंत्री, आचार्य धर्मवीर सिंह मंत्री, रवि शास्त्री, व्यायाम शिक्षक, मा. ज्ञानेन्द्र सिंह आर्य, डॉ. आर. पी. सिंह (मेरठ), अशोक शर्मा (मथुरा), मयंक आर्य (मुरादाबाद), रवीन्द्र उत्साही (पिलखुवा), ओमपाल सिंह (अमरोहा), जिले सिंह आर्य (मुरादनगर), श्री यशपाल सिंह (सहारनपुर), हरिकृष्ण शास्त्री (बिजनौर), पूरमल शास्त्री (अलीगढ़), ओम प्रकाश शास्त्री (आगरा), जनमेजय शास्त्री (गौतमबुनगर) के अतिरिक्त पूरे प्रदेश की कार्यकारिणी के अन्तरंग सदस्य विद्यमान थे।

- मदन राठी, सह संचालक, आर्यवीर दल, पश्चिम उत्तर प्रदेश

स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती महाराज की शोक श्रद्धांजलि

सेवा में,
पूज्य स्वामी आर्यवेश जी महाराज,
प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली-2

सादर नमस्ते!

महोदय,

आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश, 5 मीराबाई मार्ग, लखनऊ के कार्यालय में जैसे ही स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती के देहावसान की सूचना प्राप्त हुई कार्यालय में सभी कर्मचारियों एवं अधिकारियों ने शोकसभा का आयोजन कर मौन श्रद्धांजलि अर्पित की। सभा के समस्त कर्मचारी एवं अधिकारी दिवंगत आत्मा के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

'आर्य मित्र' परिवार आर्य प्रतिनिधि सभा, उ. प्र. की समस्त आर्य समाजों की ओर से दिवंगत पुण्य आत्मा के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि।

- स्वामी धर्मेश्वरानन्द सरस्वती, मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश

योग शिविर का आयोजन

ब्रह्मचर्य के पालन से शारीरिक व बौद्धिक विकास होता है - संजय ढाका

रोहतक : सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में गांव काहनौर में राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में तीन दिवसीय युवा चरित्र निर्माण एवं योग शिविर का आयोजन किया गया। योग शिविर के दूसरे दिन बुधवार को ईश्वर प्रार्थना के साथ कार्यक्रम आरम्भ हुआ। मुख्य वक्ता संजय ढाका रहे तथा योग प्रशिक्षण पूर्व पार्षद एवं पतंजलि योग पीठ के योग शिक्षक शिवकृष्ण आर्य ने दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राध्यापक मंगल सिंह दांगी ने की। शारीरिक शिक्षा अध्यापक संदीप कुमार, प्राध्यापक सगान सिंह, नीरज कांत, आनन्द सिंह आदि ने सहयोग किया। संजय ढाका ने कहा कि प्रत्येक युवा को चरित्र निर्माण के लिए ब्रह्मचर्य का पालन अवश्य करना चाहिए।

ग्राम काहनौर, रोहतक (हरि.) में पूर्व पार्षद शिव कृष्ण आर्य योग शिविर में प्रशिक्षण प्रदान करते हुए

ब्रह्मचर्य के पालन से शारीरिक शक्ति बढ़ती है और बुद्धि का विकास होता है। योग सत्र के दौरान पतंजलि योग पीठ हरिद्वार के मुख्य योग शिक्षक शिवकृष्ण आर्य ने सूक्ष्म व्यायाम, आसन-प्राणायाम आदि का प्रशिक्षण दिया और प्राणायाम के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए अनुलोम-विलोम, कपालभाति और भ्रामरी प्राणायाम तथा अनय आसनों का अभ्यास करवाया।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् की ओर से विद्यालय के प्राध्यापक मंगल सिंह दांगी को आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द द्वारा लिखित ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश भेंट कर सम्मानित किया। कार्यक्रम के अंत में शारीरिक शिक्षा के अध्यापक संदीप कुमार ने पतंजलि योग पीठ हरिद्वार एवं आर्य समाज के कार्यकर्ताओं द्वारा विद्यालय के प्रांगण में सुन्दर कार्यक्रम आयोजित करने पर आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर पूजा, मीनाक्षी, ईशवन्ती, सुशीला ग्रेवाल, शिवकृष्ण आर्य, मंगल सिंह दांगी, संजय ढाका, जगदीप मिलगानी, सीमा, अंजू मलिक, मोनिका, डॉ. नीरज, मुनेश कुमारी, सोनिया कुमारी, सुरजीत कौर, विक्रांत सिंधु, डॉ. मदालसा, रमेश कुमार, सज्जन सिंह, आनन्द, रवि कुमार, प्रवीन, आशा रानी, रमेश कुमारी, अमरजीत कौर, संदीप कुमारी, नीलम, मुलखराज, लक्ष्मीचन्द आदि मौजूद रहे।

दिल्ली आओ आयो — दिल्ली पंहुचो आर्य युवको

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के 37 वें राष्ट्रीय अधिवेशन के उपलक्ष्य में

राष्ट्रीय आर्य युवा सम्मेलन

रविवार, 6 सितम्बर 2015, प्रातः 9.00 बजे से सायं 4.00 बजे तक

स्थानः स्वामी श्रद्धानन्द सामुदायिक केन्द्र, राजौरी गार्डन, (सूर्या होटल के सामने), नई दिल्ली-110027

कार्यक्रमः-

11 कुण्डीय यज्ञः प्रातः 9.00 से 10.30 बजे तक - **ब्रह्मा आचार्य अखिलेश्वर जी महाराज**

मधुर भजनः प्रातः 10.30 से 11.00 बजे तक - **श्री नरेन्द्र आर्य 'सुमन'**

प्रातः 11.15 बजे-**ध्वजारोहणः श्री मायाप्रकाश त्यागी** (कोषाध्यक्ष,सार्वदेशिक सभा, नई दिल्ली)

विशेष आकर्षणः- प्रातः 11.30 से 1.00 बजे तक

आर्य युवकों/युवतियों द्वारा भव्य परेड़, योगासन, दण्ड बैठक, लाठी, तलवार, जूडो-कराटे, बाक्सिंग, डम्बल, लेजियम, स्तूप, कमांडो ट्रेनिंग आदि का भव्य व्यायाम शक्ति प्रदर्शन होगा।

मुख्य अतिथिः- माननीय डा. हर्षवर्धन जी (केन्द्रीय मन्त्री, भारत सरकार)

समारोह अध्यक्षः-डा. अशोक कुमार चौहान जी (संस्थापक अध्यक्ष, ऐमिटी शिक्षण संस्थान)

सान्निध्यः-श्री सुभाष आर्य (महापौर, दक्षिण दिल्ली नगर निगम)

विशिष्ट अतिथिः- श्री प्रवेश वर्मा (संसद सदस्य), श्री आनन्द चौहान (निदेशक, ऐमिटी शिक्षण संस्थान)

गरिमामय उपस्थितिः-श्री दर्शन अग्निहोत्री, श्री प्रभात शेखर, श्रीमती रमेश कुमारी, श्री राजीव कुमार परम, जगदीश आर्य, रवि चड्डा, राजेन्द्र लाम्बा, सत्यनारायण डंग, मुन्शीराम सेठी, चौ.ब्रह्मप्रकाश मान, सुरेन्द्र मानकटाला, रणसिंह राणा, राजीव आर्य तथा वेद प्रकाश आदि।

आमन्त्रित विद्वानः डा. वागीश आचार्य (गुरूकुल,एटा), डा. धर्मेन्द्र शास्त्री, डा. जयेन्द्र आचार्य, आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री, आचार्य सुधांशु जी (गुरूकुल खेड़ाखुर्द)।

नोटः 1. प्रातः राश-प्रातः 8 से 9 बजे तक, ऋषि-लंगर-दोपहर 1.00 से 2.00 बजे तक व चाय-जलपान सायं 4 से 5 बजे तक प्रबन्ध रहेगा। 2. दिल्ली के बाहर से आने वाले आर्य जन यदि रुकने का कार्यकम हो तो अविलम्ब सूचित करते जिससे यथोचित व्यवस्था की जा सके।

निवेदक

डा.अनिल आर्य	महेन्द्र भाई	धर्मपाल आर्य
राष्ट्रीय अध्यक्ष	राष्ट्रीय महामन्त्री	राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष

हर घर में रखने योग्य श्रेष्ठ पुस्तक

'चिकित्सा भास्कर'

लेखक - वैद्य इन्द्रदेव

सम्पादक - मधुर शास्त्री

चरक संहिता के अनुसार रोग एवं उनकी चिकित्सा - रोगों का निदान, अनेक अनुभवी संन्यासी, महात्मा तथा जन साधारण के अनुभव के आधार पर गुप्त रोगों पर किए गए प्रयोग, निर्धन, धनी व्यक्तियों के लिए शास्त्र प्रमाण अनुभव द्वारा पुष्ट, आयुर्वेद चिकित्सा का प्रामाणिक एवं सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ है। अतः सभी ग्राहकों के हित में निवेदन है कि वे उपरोक्त पुस्तक को खरीदने के लिए प्रकाशक से सीधा सम्पर्क करें।

मूल्य 200/- रुपये, डाक व्यय निःशुल्क।

प्राप्ति स्थान - मधुर प्रकाशन

2804, बाजार सीताराम, दिल्ली-110006

- मधुर शास्त्री, मो.:-9810431857

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा

25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

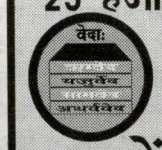

घर-घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

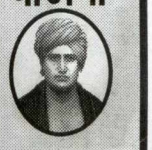

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

लागत मूल्य 3100/- रुपये

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

भारी छूट पर उपलब्ध

एक लाख रुपये अग्रिम देने वाले महानुभावों का चित्र तथा संक्षिप्त परिचय वेद सैट में प्रकाशित किया जायेगा तथा दस वेद सैट उन्हें निःशुल्क प्रदान किए जायेंगे।

3100/- रुपये का एक वेद सैट 25 प्रतिशत की छूट पर उपलब्ध है

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। **डाक व्यय 225/- रुपये अलग से देना होगा।** प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी। अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

-: प्रकाशक :-

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/15-17
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2015-17]

वेदाः ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद अथर्ववेद

अन्धकारमय अवस्था से परमज्योति-प्राप्ति

उद्वयं तमसस्परि ज्योतिष्पश्यन्त उत्तरम्।
देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम्।।

—ऋ० १/५०/१०/ ; अथर्व० ७/५/५३

ऋषिः—प्रस्कण्वः काण्वः।। देवता—सूर्यः।। छन्दः—निचृदनुष्टुप्।।

विनय—हमें ऊपर–ऊपर, अधिक–अधिक प्रकाश में उठना है। इस अन्धकारमय अवस्था से निकल परमज्योति तक पहुँचना है। हमें अपनी यह वर्त्तमान अवस्था अन्धकारमय इसलिए प्रतीत नही होती चूँकि हमें उसके अतिरिक्त अभी और किसी प्रकाश का पता ही नहीं हैं। यदि हमें इससे अगला ही प्रकश दीखने लगे तो कम–से–कम इस वर्त्तमान अँधेरी दशा से बाहर निकलने को हमारा जी अवश्य छटपटाने लगे। हाँ, उस अन्तिम ज्योति तक बेशक हम धीरे–धीरे ही पहुँचेंगे। एकदम उस परमज्योति को तो हमारी आँख सह नहीं सकेंगी, अभी उस चकाचौंध करने वाले महाप्रकाश के दृष्टिगोचर हो जाने पर तो शायद हमारी अनभ्यस्त निर्बल दृष्टि अन्धी हो जाए या हम पागल जाएँ, अतः हमें क्रमशः एक के बाद एक उच्चतर प्रकाश को देखते हुए ऊपर जाना होगा। हम इस तामसिक दशा को छोड़ राजसिक अवस्थाओं से गुजरते हुए सत्त्व के प्रकाश में पहुँचेंगे। इस जड़वाद (नास्तिकता) और भोगवाद के अन्धकार से उठ देववाद और यज्ञवाद के विविध प्रकाशों को देखते हुए उस सर्वोच्च प्रकाश में जा पहुँचेंगे जहाँ एकेश्वरवाद और सर्वोदयवाद का अखण्ड राजय है। जड़ता, स्थूलता के पार्थिव अन्धकार से उठकर सूर्य–किरणों से प्रकाशित सूक्ष्मतर विस्तृत अन्तरिक्ष की सैर करते हुए उस सूर्य ही को पा लेंगे जिसकी कि ज्योतिर्मय किरणों से अन्य सब लोक प्रकाश पा रहे हैं। हे प्रभो! हम पर ऐसी कृपा करो कि हम इस अन्धकारमय प्रकृतिग्रस्त अवस्था से उठकर नाना देवों को दिखलानेवाली अपनी आत्मिक ज्योति को विविध प्रकार से देखते हुए अन्त में तुम्हारी उस परमात्म–ज्योति को पा लेवें, जिसमें कि तुम सब देवों के देव और सब ब्रह्माण्ड के प्रेरक महान् सूर्य होकर अपने अनन्त अपार अखण्ड प्रकाश में सदैव जगमगा रहे हो, सदैव देदीप्यमान हो रहे हो।

शब्दार्थ—**वयम्**=हम **तमसः परि**=अन्धकार से ऊपर **उत्**=ऊँचे उठकर **उत्तरं ज्योतिः**=अधिक उच्च, उच्चतर, प्रकाश को **पश्यन्तः**=देखते हुए उस **देवत्रा देवम्**=सब देवों के देव, सब प्रकाशों के प्रकाशक **सूर्य**=सर्वप्रेरक, महासूर्य को **उत्तमं ज्योतिः**=उस सबसे उत्तम, उच्चतम ज्योति को **अगन्म**=प्राप्त करें।

साभार-'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

सोशल मीडिया के माध्यम से
स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

फरमाणा में कन्या चरित्र निर्माण शिविर का हुआ भव्य समापन

कन्याओं ने जूडो कराटे व योगासन एवं स्तूप बनाकर सबको आश्चर्यचकित कर दिया

कन्या भ्रूण हत्या समाज के लिए अभिशाप – ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य

स्वतंत्रता दिवस पर प्रारम्भ हुए कन्या चरित्र निर्माण व योग शिविर का आज तीज के अवसर पर भव्य समापन हुआ

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, बेटी बचाओ अभियान एवं आर्य समाज फरमाणा के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित कन्या चरित्र निर्माण व योग शिविर का आज राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय फरमाणा जिला रोहतक में आज समापन हो गया। समापन अवसर पर लड़कियों ने व्यायाम प्रदर्शन किया। जिसको देखकर उपस्थित ग्रामीणों ने दांतो तले अंगुलिया दबा ली। सर्वप्रथम सर्वांगसुंदर व्यायाम के दस अभ्यास, उसके बाद जूडो कराटे, बॉक्सिंग व योगासन तथा योगासन के स्तूप बनाकर दिखाए। शिविर में भाग लेने वाली बहनों की भाषण प्रतियोगिता भी करवाई गई एवं अतिथियों द्वारा उन्हें सम्मानित भी किया गया।

शिविर की अध्यक्ष व बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय प्रधान

बहन पूनम आर्या ने कहा कि जमीनी स्तर से जब बदलाव शुरू होगा तभी राष्ट्रीय स्तर पर बदलाव आएगा। किसी भी अभियान व आंदोलन को सफल बनाने के लिए ग्रामीण स्तर पर कार्य को मजबूती से करने की आज जरुरत है। आज परिवर्तन दिखाई देने लगे हैं परन्तु प्रयास अभी और तेज करने पड़ेंगे। बदलाव व परिवर्तन इस रूप में दिखाई देता है कि पहले बहनों को अपने अधिकारों की माँग रखने की इजाजत नहीं दी जाती थी जबकि आज उसने अपनी आवाज को बुलंद किया है। आज वो बड़े से बड़े मंच पर अपनी बात रखने में सक्षम है। बस थोड़ी लोगों की मानसिकता को बदलने की जरुरत है हमारा अगला प्रयास भी यही रहेगा कि हम गाँव–गाँव जाकर लोगों की बेटियों के प्रति दोयम दर्जे की सोच को बदल कर उन्हें भी बेटों के बराबर का अधिकार दिलवाया जा सके।

कार्यक्रम में सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान ब्र. दीक्षेन्द्र ने अपने उद्बोधन में कहा कि कन्या भ्रूण हत्या एक अभिशाप है। कन्या भ्रूण हत्या सिर्फ नारे बदलने से नहीं बल्कि मानसिकता बदलने से रुकेगी।

आर्य समाज पिछले लम्बे समय से बेटी बचाओ अभियान चलाये हुए है। सर्व प्रथम 2005 में आर्य समाज ने स्वामी दयानन्द जी के जन्म स्थान टंकारा (गुजरात) से जलियावाला बाग अमृतसर (पंजाब) तक जन–जागरण यात्रा निकाली थी। उसके बाद ये सिलसिला लगातार जारी रहा आज खुशी की बात यह है कि आज इस मुद्दे को सभी राजनैतिक, धार्मिक व सामाजिक संगठनों ने अपने एजेंडे में शामिल किया है।

देश के प्रधानमंत्री ने भी देश से बेटी बचाने की अपील की है। अब बदलाव के आसार लगते हैं क्योंकि आर्य समाज सहित कई संगठन जागरूकता फैला रहे हैं और सरकार कानून का डण्डा भी सख्त करती हुई दिखाई देती है।

बेटी बचाओ अभियान की संयोजक बहन प्रवेश आर्या, आर्य युवक परिषद के उपप्रधान मा. प्रदीप व सज्जन राठी, कोषाध्यक्ष अजय आर्य, मा. सेवा सिंह , सुनीता खासा, सोनिया आर्या, अंजलि आर्या, राजबीर आर्य ने भी अपने विचार रखे। मंच का संचालन डॉ. राजेश आर्य ने किया। बहन प्रवेश आर्या ने कहा कि बेटियों को संस्कारित करने का यह सिलसिला निरंतर जारी रहेगा। अब आर्य समाज गावँ गावँ जाकर इस तरह के शिविरों का आयोजन करेगा।

इस अवसर पर बेटी बचाओ अभियान की प्रधान व संयोजक बहन पूनम व प्रवेश आर्या को आर्य समाज फरमाणा के प्रधान मेजर भीर सिंह आर्य, नफे सिंह आर्य, डॉ सत्यवीर आर्य, मनोज पहलवान, मा. राजेन्द्र, देवेन्द्र आर्य, सूबेदार बलबीर. राजेश काजल, महावीर सिंह आदि ने स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया। शिविर में प्रथम रहने वाली बहनों को भी सम्मानित किया गया। आज का कार्यक्रम सुबह यज्ञ के साथ प्रारम्भ हुआ व उसके बाद गावँ में सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध जन चेतना यात्रा भी निकाली

गई।

शिविर में लखन माजरा सरस्वती कॉलेज की छात्राओं के अतिरिक्त निन्दालना की बेटियों ने भी भाग लिया।

कार्यक्रम में प्रशिक्षक का कार्य राष्ट्रपति जी से सम्मानित बहन सोनिया आर्या, कृति आर्या, राजकुमारी आर्या, मोनिका आर्या, मंजू आर्या, अंजलि आर्या ने संभाला। कार्यक्रम बेहद सफल रहा। बेहद व्यस्त रहता था कार्यक्रम प्रातः 5 बजे से 7 बजे तक ध्यान, संध्या व्यायाम, आसान, प्राणायाम, व सर्वांगसुंदर क्रियाएँ करवाई जाती थी। 7 से 9 बजे तक स्नान व नाश्ता, 9 से 10 तक यज्ञ, 10 से 11 बजे तक जन चेतना यात्रा, 11 से साढे 12 तक बौद्धिक, एक बजे तक विश्राम, एक बजे से 2 बजे तक भोजन, भोजन के बाद आराम व फिर 3 से 5 बजे तक भाषण व व्यक्तित्व विकास प्रशिक्षण, 5 से 7 तक जूडो कराटे, बॉक्सिंग, आसन के साथ–साथ भारतीय खेलों का प्रशिक्षण दिया जाता रहा। पूरी वयवस्था आर्य समाज फरमाणा के अधिकारियों ने संभाली।

– प्रवेश आर्या, मो.:–9416630916

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।